गिरिराज

हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

साप्ताहिक

घर बैठे गिरिराज पाइये

प्रदेश सरकार के साप्ताहिक पत्र गिरिराज की आप घर बैठे सदस्यता प्राप्त कर सकते हैं। वार्षिक सदस्यता के लिये 140 रुपये (मनीआर्डर बैंक ड्राफ्ट) सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, घोड़ा चौकी शिमला-171005 तथा आजीवन सदस्यता के लिये 1500 रुपये (केवल बैंक ड्राफ्ट) निदेशक सूचना एवं जन सम्पर्क शिमला-171002 के पते पर बनाकर भेजें। पते में पिनकोड, दूरभाष/मोबाइल नम्बर लिखना न भूलें। अधिक जानकारी के लिये 0177-2633145 या 2830374 पर सम्पर्क करें।

डाक पंजीकरण संख्या

एच.पी./42/एस.एम.एल. 2012-14

साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/बागबानी..5, संस्कृति...6-7, कहानी...8, महिला/बाल/विज्ञान जगत... 9, पहाड़ी...10

वर्ष 37 अंक 8 शिमला, 26 नवम्बर, 2014 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपये वार्षिक 140 रुपये आजीवन 1500 रुपये website:himachalpr.gov.in/giriraj.asp

पंडित नेहरू की विरासत संजोये रखने की आवश्यकता

मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है, जो सही अर्थों में आधुनिक भारत के निर्माता हैं। उनकी विरासत को राजनीतिक विचारधारा से उठकर बनाए रखा जाना चाहिए।

श्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि पंडित नेहरू की दूरदृष्टि के परिणामस्वरूप आज देश समृद्ध, धर्म निरपेक्ष, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सुदृढ़ राष्ट्र बनकर उभरा है। पंडित नेहरू के देश को आधुनिक बनाने के प्रयास पश्चिमी नही थे, परन्तु वे भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना चाहते थे, जिसमें उन्होंने पश्चिमी देशों के अच्छे पहलुओं और बेहतर आचरण को शामिल किया।

श्री वीरभद्र सिंह ने गत दिनों नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में पंडित जवाहर लाल नेहरू की 125वीं जयन्ती के अवसर पर 'नेहरू के विश्व विचार एवं उनकी विरासत' विषय पर आयोजित दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में भाग लेने के उपरांत यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन का मुख्य उद्देश्य प्रथम प्रधानमंत्री के आधुनिक भारत के निर्माण और अन्य विभिन्न विषयों पर चर्चा करना है। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में लोकतांत्रिक व सशक्तीकरण (शेष पृष्ठ 11 पर)

विकास का आदर्श बना हिमाचल

मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को उनकी जयन्ती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज हिमाचल प्रदेश विकास में देश के पहाड़ी राज्यों में एक आदर्श बनकर उभरा है, और इसका श्रेय श्रीमती इन्दिरा गान्धी को जाता है, जिन्होंने प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाया। (शेष पृष्ठ 11 पर)

डिस्कवरी ऑफ इंडिया' का अधिकांश लेखन हिमाचल में

मुख्यमंत्री ने 1962 में, जब वे तीसरी लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए थे, उन दिनों का स्मरण करते हुए कहा कि उन्हें इस बात पर गर्व है कि उन्हें भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के कार्य को नजदीक से देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के लोग पंडित नेहरू द्वारा पहाड़ी राज्य के लोगों को दिए गए स्नेह के लिए हमेशा ऋणी रहेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश के स्वच्छ वातावरण के कारण ही हिमाचल प्रदेश पंडित नेहरू के प्रवास का पहला पसंदीदा स्थल था। उन्होंने कहा कि पंडित नेहरू ने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' का अधिकांश लेखन कार्य हिमाचल प्रदेश में किया।

मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह राष्ट्रीय प्रेस दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुये।

हिमाचल प्रदेश विधानसभा शीतकालीन सत्र 5 दिसम्बर से

राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत होगा हिमाचल का ई-विधानसभा का मॉडल

हिमाचल प्रदेश विधानसभा का शीतकालीन सत्र पांच दिसंबर से आरंभ होगा। 12 दिसंबर तक चलने वाले इस सत्र में कुल सात बैठकें प्रस्तावित हैं। राज्यपाल उर्मिला सिंह ने प्रदेश सरकार को विधानसभा सत्र के लिए अनुमति प्रदान कर दी है। एक दिन प्राइवेट मेंबर डे निर्धारित किया गया है।

सत्र के दौरान कई महत्वपूर्ण विधेयकों सहित लोकहित से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होगी। इस बार शनिवार दिनांक 6 दिसम्बर, 2014 को भी सदन की कार्यवाही संचालित होगी। शुक्रवार पांच दिसंबर को पहले दिन विधानसभा का सत्र सुबह 11 बजे से आरंभ होगा।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश सरकार हर साल शीतकालीन सत्र धर्मशाला स्थित तपोवन विधानसभा भवन में बुलाती है। यह पहली बार है जब तपोवन में सात बैठकें संचालित की जा रही हैं। विधानसभा अध्यक्ष श्री बृज बिहारी लाल बुटेल ने बताया कि इस सत्र में लोक हित से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होगी। उन्होंने विधानसभा के सभी सदस्यों से आग्रह किया कि समय की उपयोगिता को देखते हुए लोगों की समस्याओं को सत्र के दौरान उठाया जाए और उन मसलों का निपटारा हो जो लोगों से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं।

श्री बुटेल ने गत दिनों एक पत्रकार वार्ता के दौरान शिमला में बताया कि हिमाचल प्रदेश में शुरू की गई ई-विधानसभा प्रणाली के मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित किया जाएगा। केन्द्रीय सूचना तकनीकी मंत्री की अध्यक्षता में होने वाले राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन में ई-विधानसभा के मॉडल को प्रदर्शित किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि केन्द्रीय सूचना तकनीकी एवं कानून मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद ने हिमाचल के ई-विधानसभा मॉडल को इस सम्मेलन में प्रस्तुत करने को कहा है। इतना ही नहीं केन्द्र सरकार के साथ- साथ केरल, कर्नाटक और नागालैंड जैसे राज्यों की विधानसभाओं ने भी ई-विधानसभा प्रणाली लागू करने के लिए प्रदेश की मदद मांगी है।

उल्लेखनीय है कि हिमाचल विधानसभा देश का पहला हाईटेक सदन है और विधानसभा की संपूर्ण कार्यवाही कागज रहित हो गई है। इस प्रणाली को प्रदेश विधानसभा ने इसी वर्ष मानसून सत्र से आरंभ किया गया था। उन्होंने कहा (शेष पृष्ठ 11 पर)

बाल स्वास्थ्य पर व्यय होंगे 439 करोड़

प्रदेशवासियों को घर-द्वार पर स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध करवाने की सरकार की वचनबद्धता को निभाते हुये सोलन जिले के धर्मपुर में 2.28 करोड़ की लागत से निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा-108 व 102 की आपातकाल में त्वरित उपलब्धता के लिये केन्द्र खोला गया है। इस त्वरित कार्रवाई केन्द्र का लोकार्पण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री कौल सिंह ठाकुर ने गत दिनों किया।

इस अवसर पर अपने सम्बोधन में श्री ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेशवासियों को विशेषकर चिकित्सा सुविधायें प्रदान करने के प्रति कृतसंकल्प है तथा इसी के तहत विगत दो वर्षों में 80 (शेष पृष्ठ 11 पर)

सामाजिक विषयों को उजागर करने में मीडिया के प्रयास सराहनीय-मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार ने सदैव मीडिया को विशेष महत्व दिया है और पत्रकारों को हर संभव सहायता उपलब्ध करवाने के लिए सरकार तत्पर है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में मीडिया सामाजिक विषयों व आम लोगों की समस्याओं को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके अतिरिक्त मीडिया प्रदेश सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों के बारे में फीडबैक देने की दिशा में भी सराहनीय कार्य कर रहा है।

श्री वीरभद्र सिंह राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर गत दिनों सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा 'सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिताः प्रेस की भूमिका' विषय पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मीडिया की लोगों में जानगरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका है वहीं सरकार व जनता के बीच संवाद स्थापित करने में भी इसकी भूमिका अहम है।

उन्होंने राज्य में मीडिया के तेजी से हुए विस्तार पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि पत्रकारों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने कार्य में स्वयं एक सीमा का निर्धारण करें और राष्ट्र की एकता को नुकसान पहुंचाने वाली टिप्पणियों से बचना चाहिए। यह पत्रकारों पर एक बड़ा उत्तरदायित्व है कि उनकी किसी भी टिप्पणी से समाज में कोई तनाव या भ्रांति उत्पन्न न हो।

मीडिया सरकार व लोगों के मध्य एक सेतु-मुकेश अग्निहोत्री

उन्होंने कहा कि नैतिक पत्रकारिता और स्वस्थ लेखन का हमेशा ही लोगों द्वारा स्वागत किया जाता है।

उद्योग तथा सूचना एवं जन सम्पर्क मंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि मीडिया लोगों व सरकार के बीच सेतु के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा मीडिया के साथ हमेशा सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रहे हैं और उनकी सभी जायज मांगों पर राज्य सरकार सहानुभूतिपूर्वक विचार करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देती आई और भविष्य में भी उन्हें भरपूर सहयोग दिया जाएगा।

जनसत्ता के कार्यकारी संपादक श्री ओम थानवी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि देश आज कठिन दौर से गुजर रहा है और भ्रष्टाचार व साम्प्रदायिकता दो मुख्य चुनौतियां देश के सामने हैं, जिन पर चर्चा तो बहुत होती है लेकिन जमीनी स्तर पर कोई कार्य नहीं हो (शेष पृष्ठ 11 पर)

पंचायत चुनाव में 'नोटा' का प्रयोग

चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी व निष्पक्ष बनाने के लिए चुनाव आयोग ने नियमों में कई अहम बदलाव किए हैं। चुनावी नियमों में किए गए बदलावों में नोटा (उपर्युक्त में से कोई नहीं) का प्रयोग भी प्रमुख रूप से शामिल है। लोकसभा व विधानसभा चुनाव में नोटा का प्रयोग पहले ही किया जा चुका है। अब लोकतंत्र की सबसे छोटी इकाई पंचायतीराज चुनाव में भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में आगामी 30 नवम्बर को पंचायतों के होने वाले उपचुनाव में इसका प्रयोग पहली बार किया जाएगा। यह जानकारी राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री टीजी नेगी ने शिमला में पत्रकार वार्ता में दी। उन्होंने (शेष पृष्ठ 11 पर)

पर्यावरण संरक्षण में युवा नागरिकों की महत्वपूर्ण भूमिका- राज्यपाल

राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह ने गत दिनों शिमला राजभवन में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण अभियान के अन्तर्गत सतलुज जल विद्युत निगम द्वारा ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के तत्वावधान में ऊर्जा संरक्षण बारे जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से आयोजित राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर श्रीमती उर्मिला सिंह ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण समय की आवश्यकता है और युवा पीढ़ी पर्यावरण संरक्षण का संदेश समाज में प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के तेजी से हो रहे ह्रास में कमी लाने के उद्देश्य से ऊर्जा संवर्द्धन इस अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

राज्यपाल ने कहा कि ऊर्जा से परिपूर्ण जीवनशैली तथा ऊर्जा बचाने के उपायों बारे स्कूली बच्चों को जागरूक बनाया जाना चाहिए, ताकि वे ऊर्जा सरंक्षण के संदेश को अपने घरों, आस-पड़ोस और समाज में पहुंचा सकें। ऊर्जा के संरक्षण से दैनिक जीवन में ऊर्जा पर होने वाले खर्चों में कमी आएगी। उन्होंने राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 1300 स्कूलों को शौचालय निर्माण के लिए अपनाने पर सतलुज जल विद्युत निगम के प्रयासों की सराहना की। इन स्कूलों में विशेषकर लड़कियों के लिए शौचालयों की सुविधा उपलब्ध करवाने पर बल दिया जाएगा।

राज्यपाल ने प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री अशोक शर्मा, ज्यूरी मैंबर्स, खण्ड प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारियों तथा एसजेवीएनएल के कर्मचारियों को प्रतियोगिता के आयोजन में दिए गए महत्वपूर्ण सहयोग के लिए सम्मानित किया।

कनिष्ठ वर्ग में दयानंद पब्लिक स्कूल, शिमला के हेमपुष्प चौहान प्रतियोगिता के विजेता घोषित किए गए, जबकि दयांनद पब्लिक स्कूल झाखड़ी के विजय प्रजापति दूसरे स्थान पर और

राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह शिमला में ऊर्जा संरक्षण राष्ट्रीय अभियान 2014 के तहत राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ।

इसी स्कूल के उदय ठाकुर तीसरे स्थान पर रहे। वरिष्ठ वर्ग में डीएवी लक्कड़ बाजार शिमला के हितेष शर्मा ने प्रथम स्थान हासिल किया। डीएवी न्यू शिमला के शौर्य शर्मा ने द्वितीय और राजकीय

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के तहत सतलुज विद्युत निगम 1300 स्कूलों में करेगा शौचालयों का निर्माण

उच्च विद्यालय मलोखर की प्रतिभा ने तृतीय स्थान पर रहीं। पहले, दूसरे और तीसरे स्थान हासिल करने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः 20 हजार रुपये, 15 हजार रुपये तथा 10 हजार रुपये के पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा, 2500 रुपये के 20 सांत्वना पुरस्कार भी प्रतिभागियों को वितरित किए।

प्रतियोगिता में प्रदेश के 14,238 विद्यालयों के 4 लाख 61 हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से कनिष्ठ और वरिष्ठ वर्ग प्रत्येक में से 50 प्रतिभागियों को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया।

वरिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिता के लिए 'ऊर्जा की कमी-सावधानी के साथ प्रयोग, 'ऊर्जा बचाओ-धरती बचाओ' तथा 'बेहतर जीवन के लिए ऊर्जा उत्पादों के साथ बदलाव', जबकि कनिष्ठ वर्ग प्रतियोगियों के लिए 'कल के सुनहरे भविष्य के लिए आज ऊर्जा बचाओ', 'ऊर्जा बचाओ-प्रकृति बचाओ' तथा 'ऊर्जा का खर्च धन का खर्च' विषय निर्धारित किए गए थे।

सतलुज जल विद्युत निगम के निदेशक श्री एन.एल. शर्मा ने राज्यपाल का स्वागत किया और जागरूकता अभियान के उद्देश्यों के साथ-साथ ऊर्जा क्षेत्र में सतलुज जल विद्युत निगम के योगदान का ब्यौरा दिया।

प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री अशोक शर्मा और हि.प्र. राज्य विद्युत बोर्ड के वित्त एवं कार्मिक निदेशक श्री राजीव शर्मा ने भी इस अवसर पर विचार रखे।

ग्राम पंचायत शिवपुर

अब 24 घण्टे सुनिश्चित हुआ जल

पांवटा विकास खंड की ग्राम पंचायत शिवपुर के गांव बरोटीवाला के दीपचंद, राजेन्द्र कुमार, सुशील कुमार, राजेश कुमार, अनिल कुमार आदि का कहना है कि पंचायत द्वारा विभिन्न विकास योजनाओं के तहत निर्मित पेयजल टंकियों से न केवल उनकी पेयजल की समस्या का स्थाई समाधान हुआ है बल्कि अब उन्हे सप्ताह के 24 घण्टे पीने का पानी घर के अन्दर ही उपलब्ध हो पा रहा है। उनका

● राजेश कुमार जसवाल

कहना है कि पहले जहां हैंडपंप से पानी भरना पडता था तो वहीं आने जाने में भी काफी समय व्यतीत हो जाता था। परन्तु अब हैंडपंप में मोटर लगाकर पानी को पंचायत द्वारा निर्मित टंकी में इक्टठा किया जाता है तथा लगातार प्रत्येक घर को पानी की सप्लाई मिलती रहती है। गांव वासियों का कहना है कि जहां लाभान्वित परिवार मिलकर बिजली का बिल अदा करते हैं तो वहीं समय-2 पर टंकियों की मरम्त व साफ सफाई का कार्य भी सामूहिक तौर पर कर रहे हैं।

इस संबंध में पंचायत सचिव श्री बाल मुकुंद ने जानकारी दी कि वर्ष 2007-08 से लेकर 2013-14 के दौरान सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत लगभग साढ़े छः लाख खर्च कर 12 ऐसी पेयजल टंकियों का निर्माण करवाया गया है। वर्ष 2007-08 के दौरान 12वां वित आयोग एवं बीडीओ ग्रांट के तहत 04 टंकियों का निर्माण करवाया गया। वर्ष 2008-09 व 2009-10 के दौरान एक-एक, जबकि 2010-11, 2012-13 व 2013-14 के दौरान भी 12वां व 13वां वित आयोग एवं बीआरजीएफ के माध्यम से दो-दो पेयजल टंकियों का निर्माण करवाया गया है। जिसके परिणामस्वरूप अब इस पंचायत के विभिन्न क्षेत्रों में निर्मित इन टंकियों के कारण लोगों को प्रतिदिन 24 घंटे पेयजल की सुविधा मुहैया हो पा रही है।

पंचायत के प्रधान श्री मंजीत सिंह का कहना है कि चालू वितवर्ष के दौरान एकीकृत जलागम विकास प्रबंधन योजना के अन्तर्गत लगभग 4 लाख रूपये की लागत वाली 4 टंकियों का निर्माण करवाया जा रहा ताकि लोगों को बेहतर पेयजल की सुविधा मिल सके।

कृषि गतिविधियों के लिए बैंकों द्वारा चार प्रतिशत की दर से ऋण उपलब्ध

मुख्य संसदीय सचिव (वन) श्री राजेश धर्माणी ने लोगों का आह्वान किया कि वे किसान क्रेडिट योजना का लाभ उठाकर कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देकर अपनी आर्थिकी सुदृढ़ करें। बैंकों द्वारा चार प्रतिशत की ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। वे गत दिनों घुमारवीं विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत दाबला के गांव कुरनाड़ी, गलासीं तथा दाबला में जनसमस्याएं सुनने के पश्चात लोगों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने किसानों, बागवानों तथा पशुपालकों के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं ताकि उनका उत्थान सुनिश्चित किया जा सके।

स्थानीय समस्याओं का निवारण करते हुए श्री धर्माणी ने कहा कि ग्राम पंचायत दाबला में बिजली की कम वोल्टेज की समस्या से निपटने के लिए उच्च शक्ति के विद्युत ट्रांसफार्मर स्थापित किए जाएंगे।

उन्होंने महिला मंडल कुरनाडी को भवन निर्माण के लिए डेढ़ लाख रूपये स्वीकृत किए तथा दाबला महिला मंडल को जमीन उपलब्ध करवाने की स्थिति में भवन बनाने के लिए तीन लाख रूपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि रावं-गलासी लिंक रोड को लोक निर्माण विभाग के अधीन किया जाएगा ताकि इसका सुधार हो सके। उन्होंने कहा कि दाबला वाया गलासी सड़क पर दस लाख रूपये खर्च किए जाएंगे। उन्होंने लेहड़ा गांव में हैंडपंप स्थापित करने के भी विभाग का निर्देश दिए।

इस रबी सीजन में लागू रहेगी राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना

किसान समुदाय को लाभान्वित करने के लिए राज्य सरकार ने वर्ष 2014-15 के रबी सीजन में प्रदेश में राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना कार्यान्वित करने का निर्णय लिया है। यह योजना प्रदेश के उन सभी किसानों पर लागू होगी जिन्होंने गेंहू व जौ की फसल उगाई है। योजना के कार्यान्वयन के लिए प्रदेश में स्थानों का निर्धारण किया

✍ रवि सहगल

गया है जिसमें तहसीलें व उप तहसीलें भी शामिल हैं।

केन्द्रीय कृषि मंत्रालय के कृषि तथा सहकारिता विभाग ने रबी सीजन के दौरान राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना के कार्यान्वयन को अपनी स्वीकृति प्रदान की है।

फसल बीमा की राष्ट्रीय कृषि बीमा की राज्य स्तरीय समन्वय समिति ने निर्णय लिया है कि योजना को रबी सीजन 2014-15 के दौरान गेहूं व जौ की फसलों पर लागू किया जाएगा। इस योजना को लागू करने की जिम्मेदारी भारतीय कृषि बीमा कम्पनी लिमिटेड को दी गई है।

योजना के तहत प्राकृतिक आग, आसमानी बिजली, आंधी, ओलावृष्टि, तूफान इत्यादि, सूखा तथा अन्य बीमारियों इत्यादि से होने वाले नुकसान को योजना छत्र के अन्तर्गत लाया गया है जबकि युद्ध व न्यूक्लर नुकसान इत्यादि इसमें शामिल नहीं होगा।

यह योजना ऋण धारक किसानों पर जिन्होंने वित्तीय संस्थानों वाणिज्य बैंकों, सहकारी बैंकों, क्षेत्रीय बैंकों तथा प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों से कृषि ऋण लिए हैं पर अनिवार्य आधार पर निर्धारित अवधि से लागू की गई है। गैर-ऋणी किसान अपनी इच्छा से योजना का लाभ उठा सकते हैं।

गेहूं व जौ की फसल के लिए कुल उत्पादन का औसतन 80 प्रतिशत स्तर निर्धारित किया गया है। ऐसे मामलों में ऋण धारक किसान को कम से कम ऋण राशि के बराबर बीमा करना होगा। यदि फसल ऋण की राशि वास्तविक उपज से अधिक है और औसतन उपज का 150 प्रतिशत है तो सामान्य

प्रीमियम दर लागू होगी, जितना ऋण लिया गया है क्योंकि पूरी ऋण राशि का बीमा करना अनिवार्य किया गया है।

पात्र छोटे व सीमान्त किसानों को कुल प्रीमियम पर 50 प्रतिशत सरकारी अनुदान के लिए पात्र होंगे। राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि मक्की, धान और आलू की बीमा योग्य फसलों पर किए जाने वाले प्रीमियम उपदान को बढ़ाने और अदरक की फसल को फसल बीमा योजना के अन्तर्गत 10 से 50 प्रतिशत करने का निर्णय लिया है जिसमें राज्य का हिस्सा 45 प्रतिशत और केन्द्र का 5 प्रतिशत है। छोटे व सीमान्त किसानों को कुल प्रीमियम की केवल 50 प्रतिशत की अदायगी करनी होगी।

पी.ए.सी. अथवा बैंक शाखाओं में ऋण धारक किसानों के फसल बीमा प्रस्ताव को स्वीकार करने की तिथि निर्धारित की गई है। गैर ऋण धारक किसानों के लिए यह तिथि 31 जनवरी, 2015 जबकि ऋण धारक किसानों के लिए 31 मार्च, 2015 निर्धारित की गई है। प्रदेश सरकार ने कार्यान्वयन एजैंसी में उपज सम्बन्धी दावे प्रस्तुत करने के लिए 30 सितम्बर, 2015 निर्धारित की है।

दावों का निपटारा केवल राज्य सरकार द्वारा प्रस्तुत उपज डाटा के आधार पर किया जाएगा जो सामान्य फसल अनुमान सर्वेक्षण द्वारा संचालित फसल कटान प्रयोगों की संख्या के आधार पर होगा। इसके अलावा कोई अन्य तरीका जैसे अन्नवारी/पैसावारी और सूखे की घोषणा इत्यादि पर नहीं होगा। राज्य स्तरीय बैंकर्ज समिति, अग्रणी बैंक प्रबन्धकों, सहकारी बैंकों तथा भारतीय कृषि बीमा कम्पनी को तत्काल इस योजना को प्रदेश में लागू करने के लिए आवश्यक पग उठाने के निर्देश दिए गए हैं।

कार्यान्वयन एजैंसी अर्थात भारतीय कृषि बीमा कम्पनी लिमिटेड को राज्य सरकार के हिस्से के जारी होने के उपरान्त शीघ्र दावों की अदायगी सुनिश्चित बनानी होगी। किसी विवाद के कारण दावे की अदायगी में देरी होती है इसके लिए कार्यान्वयन एजैंसी उत्तरदायी होगी।

बैंकों को भी यह सुनिश्चित बनाना होगा कि कार्यान्वयन एजैंसी से प्राप्त दावे राशि की प्राप्ति की तारीख से 15 दिनों के भीतर लाभार्थियों को दावे की राशि जारी व वितरित करनी होगी। जिला स्तरीय बैंकर्ज समिति के समन्वयक योजना की प्रगति का अनुश्रवण समय समय पर आयोजित बैठकों में करेंगे।

सुदृढ़ होगी खेल अधोसंरचना-मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह शिमला में हि.प्र. खेल संस्कृति एवं पर्यावरण एसोसिएशन द्वारा आयोजित टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट में विजेता टीम को ट्राफी प्रदान करते हुये।

मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि खेल आपसी एकता को बढ़ावा देते हैं जिन्हें राजनीति या किसी भी प्रकार के मतभेदों से दूर रखा जाना चाहिए। वे गत दिनों शिमला में हिमाचल प्रदेश खेल, संस्कृति एवं पर्यावरण एसोसिएशन द्वारा आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता के समापन अवसर पर बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि एसोसिएशन राजनीतिक दखल से हटकर प्रदेश में संस्कृति व खेलों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए बेहतर खेल अधोसंरचना सुविधाएं पंचायत स्तर तक स्थापित कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार नवोदित खिलाड़ियों को बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं भी प्रदान कर रही है तथा ग्रामीण खेल प्रतिभाओं को विशेष रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है।

उन्होंने विजेता टीम राज्यपाल एकादश को प्रतियोगिता जीतने पर बधाई दी जिसका नेतृत्व श्री तरूण श्रीधर ने किया। उन्होंने प्रतियोगिता में भाग ले रहे सभी टीमों के खिलाड़ियों को पुरस्कार भी वितरित किए।

श्री विक्रमादित्य सिंह ने प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि नई टीमों ने अगले वर्ष इस प्रतियोगिता में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की है।

प्रतियोगिता में सर्वाधिक रन बनाने के लिए श्री अमनदीप गर्ग को मैन ऑफ दी सीरिज घोषित किया गया।

शहरी विकास मंत्री श्री सुधीर शर्मा और पत्रकार श्री पंकज राक्टा को शतकीय पारी खेलने के लिए विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए।

इससे पूर्व, फाइनल मैच में डा. सुभाष मंगलेट के नेतृत्व में चैयरमैन बोर्ड एकादश ने बेहतर खेल प्रदर्शन किया और बहुत कम अंतर से मैच हारे।

हि.प्र. विधानसभा के अध्यक्ष श्री बी.बी.एल. बुटेल, उद्योग मंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री, मुख्य संसदीय सचिव श्री इन्द्र दत्त लखनपाल, श्री विनय कुमार, विधायकगण तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

समाज कल्याण कार्यक्रमों के लिये 1325 करोड़ का प्रावधान

सरकार समाज के असहाय तथा कमज़ोर वर्गों के सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण और विकास के लिए वचनबद्ध है। चालू वित्त वर्ष में अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक मामले विभाग के लिए 1325 करोड़ के बजट का प्रावधान किया गया है।

श्री बुटेल ने पालमपुर में अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक मामले विभाग द्वारा द्वितीय तिमाही में दस लाभार्थियों को गृह निर्माण योजना के तहत 75 हजार रुपये प्रति के हिसाब से 7.5 लाख रुपये और गृह मरम्मत के लिए चार लाभार्थियों को 1 लाख के चैक वितरित किये। पालमपुर में पेंशन के 221 मामले भी स्वीकृत किए गये हैं।

इसके बाद विधान सभा अध्यक्ष, श्री बृज बिहारी लाल बुटेल जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायत लाहला और हंगलोह के लोगों से रू-ब-रू हुए और लगभग 200 समस्याओं का समाधान मौके पर ही किया।

आंगनबाड़ी केन्द्र का लोकार्पण

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. कर्नल धनीराम शांडिल ने सभी प्रदेशवासियों का आह्वान किया कि वे स्वच्छता को अपनी विचारधारा का अभिन्न अंग बनाएं।

डॉ. शांडिल गत दिनों कसौली विधानसभा क्षेत्र की शड़ियाणा पंचायत के गद्दों गांव में बाल स्वच्छता मिशन का शुभारम्भ करने के पश्चात उपस्थित बच्चों एवं अन्य लोगों को सम्बोधित कर रहे थे। इससे पूर्व उन्होंने गद्दों गांव में 2.50 लाख रुपये की लागत से निर्मित आंगनबाड़ी केन्द्र का लोकार्पण किया।

डॉ. शांडिल ने कहा कि सरकार पूरे प्रदेश में आंगनबाड़ी केन्द्रों के अपने भवन निर्मित करने की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने इस अवसर पर गद्दों गांव में आंगनबाड़ी केन्द्र के लिए भूमि दान करने के लिए स्व. स्वर्णो देवी के सुपुत्र नन्दलाल को सम्मानित भी किया। उन्होंने वाकनाघाट-सपाटू-देलगी वाया छावशा सड़क की शीघ्र मुरम्मत के लिये लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि उप स्वास्थ्य केन्द्र पनुह के भवन की मुरम्मत के लिए शीघ्र ही धन उपलब्ध करवाया जाएगा।

इस अवसर पर उन्होंने आंगनबाड़ी केन्द्र के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों को अपनी ऐच्छिक निधि से 2100 रुपये प्रदान किए।

स्वयं सहायता समूहों के कार्यों की सराहना

आवासीय आयुक्त श्री ए.पी. सिंह ने नई दिल्ली में आयोजित 34वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में हिमाचल पेवेलियन का उद्घाटन किया, जिसमें विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा 25 विक्रय स्टॉल और प्रदेश के उद्यमियों द्वारा लगभग 35 बिक्री स्थल स्थापित किए गए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में सक्रिय भागीदारी के लिए स्वयं सहायता समूहों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि पेवेलियन में प्रदर्शित किए गए हिमाचली उत्पाद वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अद्भुत हिमाचल का परिचय करवाते हैं। उन्होंने कहा कि इस अन्तर्राष्ट्रीय मेले में मुख्य रूप से जुड़े भारतीय व्यापार प्रोत्साहन संगठन ने इस वर्ष 'महिला उद्यमी' थीम को उजागर किया है।

राज्य के स्वयं सहायता समूहों द्वारा प्रदर्शित वस्तुओं में मेले में आने वाले लोगों ने बहुत अधिक सराहा है। इससे उन्हें एक अच्छा बाजार भी उपलब्ध हुआ है। कृषि जैविक उत्पाद तथा हस्तशिल्प के बारे लोगों में भारी उत्साह है।

उदयपुर में खेल स्टेडियम का उद्घाटन

लाहौल स्पीति जिले के उदयपुर में दो करोड़ रुपये की लागत से निर्मित स्टेडियम का उद्घाटन गत दिनों राष्ट्रीय अनुसूचित जाति के उपाध्यक्ष एवं विधायक श्री रवि ठाकुर ने किया। इस अवसर पर ठाकुर ने कहा कि इस स्टेडियम की आधारशिला मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने रखी थी।

उन्होंने कहा कि सरकार जनजातीय क्षेत्रों में युवाओं को खेलकूद तथा अन्य साहासिक खेलों को बढ़ावा देने के लिए हर सम्भव सुविधाएं प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है।

श्री ठाकुर ने कहा कि इस स्टेडियम के लोकार्पण से जिले के ग्रामीण स्तर तक की प्रतिभाओं को भी जिला, प्रदेश, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का मौका मिलेगा।

नगरोटा-बगवां क्षेत्र में विकास परियोजनाओं के लिये 35 करोड़ स्वीकृत

नगरोटा-बगवां विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों के लिए लगभग 35 करोड़ रुपये की परियोजनाएं नाबार्ड से स्वीकृत की गई हैं। यह जानकारी परिवहन, तकनीकी शिक्षा और खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्री, श्री जी.एस. बाली ने गत दिनों कांगड़ा में विकास कार्यों की समीक्षा के लिए अधिकारियों की बैठक के आयोजन के उपरांत दी।

उन्होंने कहा कि राजीव गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान टांडा में मरीजों के साथ आने वाले तामीरदारों के लिए एक करोड़ रुपये की लागत से सराय भवन का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस भवन के निर्माण के लिए नगरोटा-बगवां लोक कल्याण समिति 25 लाख रुपये उपलब्ध करवा रही है जबकि शेष 75 लाख रुपये प्रदेश सरकार इसके लिए उपलब्ध करवाएगी।

श्री बाली ने बताया कि नगरोटा-बगवां में एक करोड़ 20 लाख रुपये की लागत से बन रहे ओबीसी भवन के बाहरी कार्य के लिए 10 लाख रुपये की अतिरिक्त राशि प्रदान की जा रही है। नगरोटा-बगवां में 10 लाख रुपये की लागत से बेरोजगार भवन का निर्माण भी किया जाएगा जिसमें बेरोजगार युवाओं के लिए पुस्तकालय, जिम इत्यादि स्थापित किए जायेंगे ताकि बेरोजगार युवा रोजगार प्राप्ति के लिए परीक्षाओं की तैयारी व अपने समय का सदुपयोग कर सकें।

श्री बाली ने जानकारी दी कि विधानसभा क्षेत्र की कुछ पंचायतों में कम वोल्टेज की समस्या के निदान के लिए इस वर्ष के अंत तक 11 नए ट्रांसफार्मर स्थापित किए जा रहे हैं

उन्होंने कहा कि विधानसभा के चंगर क्षेत्र की पुरानी पेयजल परियोजनाओं के स्रोतों के संवर्द्धन पर 4 करोड़ 25 लाख रुपये व्यय किए जा रहे हैं जिससे समलोटी, निहारगलू, सरोत्री, चंदरोट इत्यादि पंचायतों के लोगों को लाभ प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि 13 करोड़ रुपये की लागत से ग्राम पंचायत हटवास, ठारू व नगरोटा-बगवां शहर के लिए एक नई पेयजल योजना निर्मित की जा रही है। इसके अतिरिक्त खाबा व कंडी पंचायत के लिए 90 लाख रुपये पेयजल पर व्यय किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस वर्ष विधानसभा क्षेत्र में 70 लाख रुपये व्यय कर 42 हैंडपंप स्थापित किए जा चुके हैं जबकि 25 अतिरिक्त हैंडपंप स्थापित किए जाने प्रस्तावित हैं।

21वीं राष्ट्रीय वन खेलकूद प्रतियोगिता में हिमाचल ने जीते 15 पदक

21वीं राष्ट्रीय वन खेल-कूद प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश वन विभाग के खिलाड़ियों के दल ने शिमला में वन मंत्री श्री ठाकुर सिंह भरमौरी से भेंट की।

श्री भरमौरी ने प्रदेश की टीम को 15 पदक जीतने पर बधाई देते हुए कहा कि इससे प्रदेश का नाम रोशन हुआ है और विभाग का गौरव बढ़ा है।

4 से 8 नवम्बर 2014 तक गोवा के पणजी में आयोजित राष्ट्रीय वन खेल-कूद प्रतियोगिता में देशभर से 30 टीमों ने भाग लिया।

प्रदेश की पुरूष टीम ने वॉलीबाल में लगातार छठी बार स्वर्ण पदक प्राप्त किया जबकि महिला खिलाड़ियों ने कबड्डी में लगातार तीसरी बार स्वर्ण पदक प्राप्त किया। बास्केट बाल (पुरूष), टेबल टेनिस (पुरूष डबल्स वर्ग) तथा टेबल टेनिस (वरिष्ठ) में रजत तथा टेबल टेनिस ओपन एकल में संजीव सूद ने कांस्य प्राप्त किया।

एथेलैटिक्स में सोलन वन मण्डल की रेखा ठाकुर ने महिला एथलैटिक्स मुकाबलों में गोला फैंक, चक्का फैंक तथा भाला फैंक प्रतियोगिताओं में तीन स्वर्ण पदक अर्जित कर प्रदेश का नाम रोशन किया। रेखा को सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट के खिताब से भी सम्मानित किया गया। हमीरपुर वन मण्डल के अंकुर शर्मा ने 200 मीटर पुरूष दौड़ में स्वर्ण तथा 100 मीटर दौड़ में कांस्य पदक अर्जित किए।

सहकारिता आंदोलन से सुदृढ़ हुई ग्रामीण आर्थिकी

61वें अखिल भारतीय सहकारिता दिवस का जिला स्तरीय समारोह सरवरी स्थित दि कुल्लू जिला सहकारी विकास संघ के परिसर में आयोजित किया गया। यह दिवस कुल्लू जिला सहकारी विकास संघ के स्वर्ण जयंती दिवस के रूप में भी मनाया गया। समारोह में अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी विनय सिंह ठाकुर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने कहा कि सहकारिता के माध्यम से कुल्लू जिले ने हस्तशिल्प व हथकरघा में देश भर में अपनी अलग पहचान बनाई है। इससे ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़ करने में सहायता मिली है।

उत्कृष्ट कार्य के लिए सहकारी सभाएं सम्मानित

भुट्टी वीवर्ज कोऑपरेटिव सोसाइटी भुट्टी कॉलोनी, सचाहणी कृषि सेवा सहकारी सभा, बजौरा कृषि सेवा सहकारी सभा, रामशिला वीवर्ज अखाड़ा बाजार, मनाली एचपीडीटीसी सैलरी अर्नर सहकारी सभा, चंसारी कृषि सेवा सहकारी सभा, ग्रेट हिडिंबा हैंडलूम वीवर्ज मनाली, लाहौल आलू उत्पादक सहकारी सभा, मंगलौर कृषि सेवा सहकारी सभा, कनौन कृषि सेवा सहकारी सभा, बंजार हैंडलूम वीवर्ज सहकारी सभा, शुश कृषि सेवा सहकारी सभा, शमशरी महादेव दुग्ध सहकारी सभा, निरमंड कृषि सेवा सहकारी सभा और चंबू देवता दुग्ध उत्पादक सहकारी सभा के अलावा दि मारकंडा टैक्सी ऑपरेटर यूनियन, मुरारी माता स्टोन क्रशर लारजी तथा इन्नर सराज सनौर वैली ट्रक ऑपरेटर को भी सम्मानित किया गया।

हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण
गिरिराज

बुरी संगत उस कोयले के समान है जो गर्म हो तो हाथ को जला देता है और ठंडा हो तो काला कर देता है। *-अज्ञात*

निमंत्रण से निवेश

सदियों से ही पहाड़ी उत्पादकों द्वारा उत्पादित चीजों की मांग रही है। चाहे वह खेतों में उत्पादित हो या प्रकृति में। देशभर के निवासियों के लिए सदैव ही पहली पसंद रहे हैं। अनारदाना, अदरक, आलू, चिलगोजा, चाय, अखरोट, शहद, घी का निर्यात अफगानिस्तान, पाकिस्तान तक के उदाहरण किताबों में मिलते हैं तथा लवी, कुल्लू व मण्डी के मेले इसके साक्षात उदाहरण है। इसके इलावा यहां के हतकरघा व हस्तशिल्प उत्पाद भी लोकप्रिय थे। यहां के समाज ने समय के साथ नये प्रयोगों तथा प्रयासों को अपनाया है। किसानों ने पारम्परिक खेती से आधुनिक खेती को अपनाया है। शिक्षित युवाओं ने उद्यम स्थापित करने की ओर कदम रखा है। बदलते परिदृश्य तथा आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में आर्थिक सम्पन्नता के मायने बदले हैं। हिमाचल आज फल राज्य से उद्योग राज्य बनने की ओर अग्रसर है। विगत छः दशकों में हिमाचल की परिस्थिति पूर्णतः बदल गई है। राज्य के गठन के समय हिमाचल एक पिछड़े राज्य के रूप में जाना जाता था। लेकिन नई नीतियों एवं कार्यक्रमों के लागू होने से अब राज्य, देशभर में एक उभरती हुई सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाने लगा है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रतिव्यक्ति आय 83899 रुपये, साक्षरता दर 82.82 प्रतिशत, शिक्षा पर प्रति व्यक्ति सार्वजनिक व्यय 1391 रुपये, प्रति वर्ष उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों की संख्या 60 हजार, स्वास्थ्य पर प्रति व्यक्ति सार्वजनिक व्यय 377 रुपये, शतप्रतिशत विद्युतिकरण व 34 हजार किलोमीटर सड़क मार्ग उपलब्ध है। मौजूदा अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए सरकार ने आय सृजन करने वाले क्षेत्रों जैसे उद्योग, ऊर्जा तथा पर्यटन को प्राथमिकता प्रदान की है। हिमाचल को निवेशकों का एक पसंदीदा स्थल बनाने के लिए 'निमंत्रण से निवेश' कार्यक्रम आरम्भ किया गया है। प्रथम चरण में देश के तीन बड़े शहरों मुम्बई, बैंगलुरु तथा अहमदाबाद में निवेशक सम्मेलनों का आयोजन कर एक सार्थक पहल की गई है। मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह के नेतृत्व में आयोजित इन सम्मेलनों में प्रदेश द्वारा उद्योगों को दी जा रही सुविधाएं एवं प्रोत्साहनों की जानकारी देने में जो सफलता मिली वहीं इससे एक सप्ताह में लगभग आठ हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। सबसे गौरतलब बात यह रही कि हिमाचल के मूल निवासी जो देश में आज ख्याति प्राप्त उद्योगपतियों की सूची में आते हैं, ने भी अपने राज्य में निवेश के प्रति इच्छा जाहिर की। यह एक सुनहरा मौका था जब हम अपनी क्षमताओं को देश के उद्योगपतियों के समक्ष रख सकें। देश के शीर्ष औद्योगिक घरानों के साथ सीधा सम्वाद करने का भी सुअवसर मिला। राज्य सरकार के यह प्रयास सराहनीय है तथा आने वाले वर्षों में हिमाचल को एक समृद्ध एवं सम्पन्न राज्य बनाने की दूरगामी सोच है। वह दिन दूर नहीं जब हिमाचल के कारखानों में उत्पादित उत्पादों के लिए देश व विदेश के बाजार लालायित होंगे। सरकार के ये प्रयास औद्योगिक क्रांति की ओर अग्रसर है।

अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम के सराहनीय कदम

समाज तभी आगे बढ़ सकता है, जब सभी वर्गों का समान व संतुलित विकास सुनिश्चित हो। सर्वकल्याण-सर्वांगीण विकास की विचारधारा को अपनाकर हिमाचल प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। प्रदेश में वृद्धों, विधवाओं तथा विकलांगों को दी जाने वाली सामाजिक सुरक्षा पेंशन को 450 रुपये से बढ़ाकर 550 रुपये प्रतिमाह किया है। 80 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के वृद्धजनों को एक हजार रुपये की पेंशन दी जा रही है। अक्षम व्यक्तियों को मासिक 550 रुपये तथा 70 प्रतिशत से अधिक विकलांग व्यक्तियों को 750 रुपये दिये जा रहे हैं। अक्षम विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए आय सीमा की शर्त को हटा दिया गया है। कल्याण योजनाओं के तहत लाभ प्राप्त करने के लिए वार्षिक आय सीमा को 20 हजार रुपये से बढ़ाकर 35 हजार रुपये किया है। इसी तरह राज्य सरकार द्वारा सभी वर्गों के तीव्र सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिए कल्याण बोर्डों का गठन किया गया है। हिमाचल प्रदेश अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम को अक्षम व्यक्तियों को सामाजिक व आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने तथा समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रदान किये गये ऋण तथा ऋण की उगाही के क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए भारत सरकार के उपक्रम राष्ट्रीय अक्षम वित्त एवं विकास निगम द्वारा 5.54 लाख का नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया है। काबिलेगौर है कि निगम ने वर्ष 2000 से 1140 पात्र अक्षम व्यक्तियों को स्वरोजगार आरम्भ करने के लिए 20 करोड़ रुपये के ऋण प्रदान किये हैं। इस सुविधा से अक्षम व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनाने में सफलता मिली है। इसके लिए निगम के अधिकारी व कर्मचारी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने सरकार की कल्याणकारी नीतियों को लागू करने में अहम भूमिका निभाई है।

साम्प्रदायिक सद्भावना

भारत एक विशाल देश है जिसकी जनसंख्या लगभग 120 करोड़ की है। इस महान देश में कई धर्मों के लोग बसते हैं। कई सम्प्रदाय, कई जातियों के लोग व विचारधाराएं हैं। भौगोलिक दृष्टि से भी देश के कई भागों में अनेकता है कहीं पर्वत हैं तो कहीं मरूस्थल, कहीं नदियां कलकल करती हैं तो कहीं सागर, महासागर की लहरें, पृथ्वी के चरण स्पर्श कर रही है। कहीं बड़े-बड़े शहर हैं तो कहीं भव्य मंदिर, प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर तथा अन्य

✍ डॉ. ओ.पी. शर्मा

धार्मिक स्थल लोगों की श्रद्धा व आस्था के केन्द्र है। यह स्थल सभी लोगों को एक समान सांत्वना शान्ति, आसरा व शक्ति प्रदान करते हैं। भारत हमारी मातृभूमि है इसे सेवा व समर्पण की आवश्यकता है। समाज जितना सगरस होगा उतनी ही राष्ट्रीय शक्ति बढ़ेगी और राष्ट्र उन्नत होगा। समाज में ऊंच नीच, धनी निर्धन, सभी एक समान है। जिम्मेदार लोगों के दूरगामी विचार न होने से समाज में विषमताएं आती हैं इस पर चिन्तन मनन करना आवश्यक है। हमें पूर्ण निष्ठा से समाज को सकारात्मक भाव से अंत में खपड़े व्यक्ति के साथ काम करना होगा। हमें अपना आचरण बदलना होगा। समाज एक कड़ी है जिसमें जुड़कर कुछ करने की सामर्थ्यता मिलती है। हमें आपस में सद्भावना पूर्ण व्यवहार करने की आवश्यकता है। मिलकर कार्य करें, राष्ट्र के लिए समर्पित होकर सेवा करें।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में रहकर ही प्रसन्न रहता है। समाज देश की महत्त्वपूर्ण इकाई है। समाज में सब मनुष्य समान है। बच्चा जब जन्म लेता है तो उसका कोई नाम नहीं होता उसका कोई धर्म या जाति नहीं होती। लहू का रंग एक होता है। समाज ही इसे नाम, जाति व धर्म सिखाता है। जब जन्म से हमसब एक समान है तो बाद में नाम, जाति, धर्म या सम्प्रदाय में कोई भेदभाव क्यों है। प्रसिद्ध कवि इकबाल साहब ने कहा है 'मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना, हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा।' धर्म के नाम पर लोगों को बांट्टे हैं तो समाज की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। भेदभाव से घृणा पैदा होती है, क्रोध से वैमनस्य जन्म लेता है, सुख शान्ति समाप्त होती है। लड़ाई झगड़े बढ़ते हैं। समूह में ये अवगुण विनाशकारी होते हैं। सभी धर्मों में मानव को श्रेष्ठ जीवन बिताने की प्रेरणा व शिक्षा मिलती है। कोई धर्म एक दूसरे के विरुद्ध नहीं है।

सभी धर्मों की शिक्षा है विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भावना हो। मनुष्य सद्मार्ग पर चले तथा एक दूसरे की मदद करें। दीन-दुखियों की सेवा करें फिर चाहे हिन्दू है, मुस्लिम है या इसाई, सिख है या कोई और सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता है। आपस में सभी एक समान मनुष्य हैं भाई-भाई हैं। सभी परस्पर प्रेम से रहें, जिसको जहां जाना है, जिस धर्म में रहना है रहे। हमारे देश वासियों को किसी भी धर्म को अपनाने की स्वतन्त्रता है। सभी धर्मों के लोगों को समान अधिकार है। सरकार सभी धर्मों का आदर करती है और धर्म के नाम पर सम्प्रदाय के नाम पर रंग जाति के नाम पर भेदभाव नहीं हो सकता। फिर न जाने लोग क्यों वैमनस्य, ईर्ष्या रखते हैं। देश में धर्म के नाम पर झगड़े करते हैं। बंद व आंदोलन करते हैं। देश की सम्पत्ति को हानि करते हैं, देश के विकास में अवरोध पैदा करते हैं। लोगों से लोगों का जीना दूभर कर अशान्ति व भय पैदा करते हैं। इससे राष्ट्र की शक्ति कम होती है। देश की उन्नति में रुकावट आती है जिससे देशवासियों को ही नुकसान होता है। हमारे देश में ही धर्म के नाम पर ही कई प्रदेशों में कई घटनाएं हो रही हैं जिससे लोगों को बहुत कष्ट हो रहे हैं। जब हम स्वतन्त्रता की बात करते हैं तो इसका यह आशय नहीं कि स्वतन्त्रता या धर्मनिरपेक्षता के नाम पर जानबूझ कर लोगों को भ्रमित कर विवाद बढ़ाएं या अलगाव करें। न ही अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए आन्दोलन या प्रदर्शन कर देश के विकास में बाधा डालें। अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग न कर मानव कल्याण तथा देश को सुदृढ़ व सुखमय बनाने में अपना भरपूर सहयोग दें। गुरवाणी में लिखा हैः एक नूर ते सब जग उपजा कौन भले कऊ मंदे। अर्थात् मानव जन्म से एक जैसा होता है न कोई अच्छा होता है न बुरा। भला व बुरा कर्म से बनता है भगवान अल्लाह खुदा ने हर इन्सान को एक जैसा ज्ञान, शक्ति, बुद्धि तथा शरीर दिया है मानव ही मानव में भेद करता है मानव की शरीर संरचना एक जैसी है लहू का रंग भी एक है सब में भला बुरा सोचने व जानने की शक्ति है। इसलिए हर प्राणी का संसार में एक जैसा व्यवहार, आचरण व सुरक्षा होनी चाहिए। कवि ने ठीक ही कहा हैः

न सूरत बुरी है न सीरत बुरी है,
बुरा वह जिसकी नीयत बुरी है।

अंग्रेजी में एक उक्ति हैः

Nothing is good or bad it is the only you who make it so.

महात्मा गांधी जी का मानवता का संदेश है 'अहिंसो पर्वो धर्मः' हिंसा से विनाश होता है, कष्ट होता है इसलिए प्रत्येक मानव को अहिंसा के मार्ग पर चलता चाहिए ताकि लड़ाई झगड़ों से बचा जाए नरसंहार न हो और मानवता सुखी जीवन व्यतीत करे।

मनुष्य की सबसे बड़ी सेवा है मानव कल्याण के लिए कार्य करना न कि उन्हें दुःख देना और हमारा ध्येय होना चाहिएः-

न सिख न इसाई, न हिन्दू न मुस्लमान,
हम सब भाई-भाई और सबसे पहले इंसान।।

अंत में यह प्रार्थना करना चाहूंगा-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पशयन्तु, माकश्चिद् दुख भाभवेंत्।।

युवा हमारे देश का धन है, युवा हमारे देश का भविष्य है युवा जैसे जोंगे हमारी अगली पीढ़ी भी वैसी होगी। युवाओं को अच्छी शिक्षा, संस्कार, व्यवहार व सभ्यता की सलाह दी जाए। हमारे सूफी संत शिक्षक गुरु महात्मा इस देश की साम्प्रदायिक सद्भावना के स्रोत हैं। इस महान देश के प्रार्थना घर, मन्दिर, गिरजाघर गुरुद्वारे मस्जिद तथा अन्य धार्मिक स्थल हमारी श्रद्धा एवं आस्था के केन्द्र है ये श्रद्धा स्थल हमें साथ-साथ रहने व जीवनयापन की प्रेरणा देते हैं हमारे युवा इन आस्था केन्द्रों से शिक्षा लेकर साम्प्रदायिक सद्भावना के स्रोतों को संजोए रखें ताकि हजारों वर्षों तक हमें शिक्षा मिलती रहे और हम सच्चे रास्ते पर चलकर जीवन खुशी खुशी से बिताएं।

परिभाषा बदलने से कम नहीं होगी देश में गरीबी

आजादी के छः दशक से ज्यादा समय गुजर जाने के बाद भी हमारा देश गरीबी निर्धारण का कोई स्पष्ट पैमाना नही बना पाया है कि आखिर गरीब कौन है? योजना आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञ दल की रिर्पोट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में जिन लोगों को 2400 कैलोरी और शहरी क्षेत्र में 2100 कैलारी प्रतिदिन प्राप्त नही होता है उन्हें गरीबी से नीचे माना गया है। जबकि लाकड़ावाला फार्मूले में शहरी निर्धनता के आकलन हेतु औद्यौगिक श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य

● डॉ. बलदेव सिंह नेगी

सूचकांक और ग्रामीण क्षेत्रों में इस उदेश्य हेतु कृषि श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक को आधार बनाया गया। ऐसे में सवाल उठता है कि किस पैमाने को सही माना जाए। जब देश में गरीबी निर्धारण की नीति स्पष्ट नहीं होगी तो समझा जा सकता है कि गरीबी मिटाने के संकल्प का हश्र क्या होगा और यह समझने में भी देर नहीं लगनी चाहिए कि गरीबी क्यों नही मिट रही है। वर्ष 2011-12 में तेंदूलकर कमेटी के मुताबिक 33.33 रूपये शहरों में और 27.20 रुपये गांवों में प्रतिदिन खर्च करने वाला व्यक्ति गरीबी रेखा के अन्दर नही होगा। इस हास्यपद और विवेकहीन गरीबी के निर्धारण के कारण ग्रामीण गरीबी 41.8 प्रतिशत से कम होकर 25.7 प्रतिशत और शहरी गरीबी की प्रतिशतता 25.7 से 13.7 रह गई।

राष्ट्रीय मानव विकास की रिपोर्ट के अनुसार विगत वर्षो में लोगों की व्यय क्षमता में कमी आई है यानि निर्धनता बढ़ी है। लेकिन आश्चर्य यह है कि देश में करोड़पतियों की संपदा में चौखा मुनाफा हो रहा है। आर0 बी0 सी0 वेल्थ मैनेजमेंट द्वारा जारी विश्व संपदा रिपोर्ट (2013) के मुताबिक भारत में करोड़पतियों की संख्या में 22.2 प्रतिशत का इजाफा हुआ है।

गरीबी के खिलाफ लड़ने के लिए जरूरत है राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना को और व्यापक स्तर पर लागू करने की जिसमें काम के दिन 100 से बढ़ाकर पूरे सालभर करने की क्योकि विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी रिर्पोटों के अनूसार यह योजना गरीबों के लिए वरदान सिद्ध हुई है

देश में बढ़ती गरीबी को खत्म करने के लिए आज जरूरत है गरीबी निर्धारण के सही पैमाने तय करने की, देश में लक्षित की जगह सार्वजनिक खाद्य वितरण प्रणाली की बहाल करने की तथा वितरण प्रणाली की खामियों को दूर करने की। विशेषतः सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत आने वाली को खुले बाजार में स्थानंतरण रोकने की। यह किसी विरोधाभास से कम नहीं है कि एक तरफ हमारे खाद्यान भण्डारों में लाखों टन अनाज सड़ रहा है दूसरी तरफ गरीब भूखमरी का शिकार हो रहें हैं। आकड़ों के अनुसार 30 करोड़ से ज्यादा लोग हर रोज भूखे रहते है दूसरी तरफ हर साल 44 हजार करोड़ का आनाज सरकारी गोदामों में सड़ जाता है लेकिन सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के बावजूद अनाज गरीबों में नही बांटा जा रहा।

गरीबी के खिलाफ लड़ने के लिए जरूरत है राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना और व्यापक स्तर पर लागू करने की जिसमें काम के दिन 100 से बढ़ाकर पूरे सालभर करने की क्योकि विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी रिर्पोटों के अनूसार यह योजना गरीबों के लिए वरदान सिद्ध हुई है

हमारे देश में किसान बैकों और साहूकारों द्वारा दिए गए ऋण न चुका पाने की वजह से आत्महत्या की घटनाएं प्रकाश में आई है लेकिन हमारी सरकारें अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन और विश्व बैक में अमीर देशों की दादागिरी के चलते अपने देश की सम्प्रभुता को गिरवी रख कर वही नीतियां अपना रहीं हैं जो उनके द्वारा थोपी जा रही हैं। फलस्वरूप विकसित देश अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि अपने किसानों को तो भरपूर सबसीडी दे रहें है जहां उनका उत्पाद बाजार में सस्ते दामों पर उपलब्ध है और दूसरे तरफ यह विकसित देश भारत जैसे विकासशील देशों पर दबाव बनाते हैं कि अपने गरीब किसानों को सबसीडी में कटौती करें जिससे हमारे किसानों को कर्ज लेना पड़ता है फिर पैदावार कम होने और बाजार में सही कीमत न मिलने की वजह से किसान ऋण चुका नहीं पाता और सरकारी मदद न मिलने की वजह से किसान के पास आत्महत्या के अलावा कोई चारा नही बचता।

यह अंतर्विरोध दर्शाता है कि देश में विकास की गति असंतुलित है अन्यथा यह संभव नहीं है कि करोड़पतियों की तादाद बढ़े और उस अनुपात में गरीबों की फौज कम न हों। समझना होगा कि देश में गरीबी तभी खत्म होगी जब तमाम योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक भरपूर पहुंचेगा और सरकारों की अमीरों को छूट और गरीबों की लूट की नीति में बदलाव आएगा तथा सरकारों को गरीबी को कम दिखाने के आकड़ों की बाजीगरी से बाज आना होगा।

संरक्षित वातावरण में सब्जी पौध उत्पादन

डॉ. दीपा शर्मा
डॉ. संजीव कुमार बन्याल

स्वस्थ पौध सब्जी उत्पादन का आधार है। खुले वातावरण में तैयार की गई पौध को अनेक प्रकार के जैविक व अजैविक कारक भारी नुकसान पहुंचाते हैं जिस कारण से सब्जी की उत्पादकता एवं गुणों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कई प्रकार के जैविक कारक अधिकतर वर्षाकालीन सब्जी पौध को नुकसान पहुंचाते हैं। अजैविक कारकों में मुख्य रूप से प्रकाश, तापमान व आर्द्रता प्रमुख हैं। जिनकी अधिकता एवं कमी पौध की उत्पादन क्षमता एवं उनके गुणों को प्रभावित करती है। तापमान की अधिकता पौध को झुलसा देती है एवं अत्यधिक कम तापमान से पौध की वृद्धि एवं विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार अधिक आर्द्रता कई प्रकार के कवक एवं जीवाणुजनित रोगों के प्रकोप में सहायक होती है एवं कम आर्द्रता पौध को झुलसाने में सहायक होती है। प्रकाश की मात्रा कम होने पर पौधे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया अच्छी प्रकार से नहीं कर पाते है। जिसका सीधा प्रभाव उपज एवं फसल के गुणों पर पड़ता है।

खुले वातावरण में तैयार की गई पौध को अनेक प्रकार के जैविक व अजैविक कारक भारी नुकसान पहुंचाते हैं जिस कारण से सब्जी की उत्पादकता एवं गुणों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

अतः आज के वातावरण में संरक्षित संरचनाओं में सब्जी पौध उत्पादन कर न सिर्फ उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है बल्कि उपज की गुणवत्ता को भी बरकरार रखा जा सकता है।

संरक्षित वातावरण में सब्जी पौध उत्पादन के लाभ

स्वस्थ व उच्च गुणवत्ता की सब्जी पौध को कम समय में तैयार किया जा सकता है।

बीज की अन्यथा अधिक मात्रा, कम अंकुरण की समस्या का समाधान तथा प्रतिकूल वातावरण से पौध को नुकसान का भय कम रहता है।

पौध की जड़ अधिक विकसित होती है जिससे पौधा रोपित करने के बाद जल्दी बढ़वार पकड़ लेता है।

नर्सरी-ट्रे में पौध तैयार कर जड़ टूटने के नुकसान से बचाया जा सकता है।

पौध की बढ़वार एक समान होने से मुख्य खेत में रोपाई के बाद पौधे की बढ़वार एक समान होती है जिससे एक ही प्रकार के कृषि कार्य को हम अपना सकते हैं।

पौध लगाने की विधियां

पॉलीथीन बैग विधिः

इस विधि में कद्दू वर्गीय सब्जियों जैसे खीरा, घीया, करेला, कद्दू आदि की पौध को पॉलीबैग में तैयार किया जाता है। पॉलीबैग को 1:1:1 की मात्रा में एक भाग छनी हुई मिट्टी, एक भाग रेत व एक भाग गोबर की खाद को मिलाकर भरतें हैं। पॉलीबैग की निचली तरफ एक छेद किया जाता है जिससे पानी की निकासी हो सके। यदि पानी की निकासी नहीं होगी तो अधिक नमी के कारण बीज के सड़ने की सम्भावना रहती है। इस विधि में एक पॉलीबैग में एक ही पौधा तैयार किया जाता है।

प्लग-ट्रेः

इस विधि में प्लास्टिक की बनी हुई ट्रे में मिट्टी रहित माध्यम या मिट्टी माध्यम में गड्ढों को भरकर कम समय व ज्यादा संख्या में पौध तैयार की जा सकती है। ज्यादा गड्ढों वाली प्लग ट्रे का उपयोग टमाटर, शिमला मिर्च तथा बैंगन आदि की पौध तैयार करने के लिये किया जाता है।

इस प्लग ट्रे में मुख्य रूप से मिट्टी रहित माध्यम, कोकोपीटः वर्मीकुलाइटः परलाइट को 1:1:1 के अनुपात में मिलाकर भरते हैं। प्लग ट्रे भरने के लिये विकल्प के रूप में वर्मीकम्पोस्ट, मिट्टी व रेत को 1:1:1 के अनुपात में मिलाकर भरें।

प्लास्टिक लो टनल/पॉलीटनल में पौध उत्पादनः

प्लास्टिक लो टनल को मिनी पॉलीहाउस भी कहते हैं क्योंकि यह पॉलीहाउस के सिद्धांत पर कार्य करता है। इस विधि का उपयोग मौसम के अनुसार अस्थाई तौर पर किया जाता है जो पौध उत्पादन विधियां बाहर अपनाई जाती है उसमें लो टनल विधि से पौध को अच्छी तरह ढककर स्वस्थ पौध तैयार की जाती है। लो-टनल पॉलीहाउस का अर्थ है उच्च गुणवत्ता वाली स्वस्थ एवं रोगमुक्त सब्जियों की पौध तैयार करने के लिये कम से कम खर्च से पारदर्शी पॉलीथीन से गुफानुमा बनाया गया छोटा घर जिसमें हानिकारक कीट एवं रोग के जीवाणुओं के आने की सम्भावना बिल्कुल नहीं रहती। इस तरह की टनल में ताप तथा गर्मी नियन्त्रित रहती है जो कि बीज अंकुरण व स्वस्थ पौध तैयार करने के लिये अनुकूल वातावरण उत्पन्न करती है।

लो-टनल पॉलीहाउस बनाने के लिये ऐसे स्थान का चयन करें जहां पानी का जमाव न हो तथा किसी बड़े पेड़ या दीवार इत्यादि की छाया न पड़ती हो। चयनित स्थान पर जंगली झाड़ी या खरपतवार इत्यादि भी नहीं होने चाहिये क्योंकि ऐसे स्थान पर हानिकारक कीट व रोग के जीवाणु व विषाणु बहुतायत में होते हैं।

संरक्षित वातावरण में पौध उगाकर किसान भाई पूरा साल स्वस्थ पौध प्राप्त कर सकते हैं और अच्छा पैसा कमा सकते हैं। अतः सब्जियों की सफल खेती के लिये संरक्षित वातावरण में पौध तैयार करने का विशेष महत्व है। क्योंकि जहां पौध बाहरी वातावरण के प्रभाव से सुरक्षित रहती है वहीं मृदा तथा वायुजनित बीमारियों के उत्पन्न होने की सम्भावना कम होती है तथा अंकुरण सुनिश्चित होने से खुले वातावरण की तुलना में आधे बीज की बचत होती है।

मौसमी अनिश्चितता को कम करने के उपाय

● राजेन्द्र प्रसाद
● जहान्वी शेखर
● श्वेता सहगल
● अनुपम शर्मा

जीवन पर्यावरण के प्राकृतिक संसाधनों के संयोजन से बढ़ता-फूलता और समृद्धशाली होता है। यह महत्वपूर्ण है कि पेड़-पौधों व पशुओं के जीवन चक्र के दौरान अनुकूल पर्यावरण की स्थिति (वर्षा, तापमान, विकिरण इत्यादि) बनी रहे। प्रदेश में सर्दियों एवं मानसून में पर्याप्त वर्षा होती हैं। इससे विभिन्न प्रकार की फसलें और पशुधन पालन के लिए लगभग एक आदर्श वातावरण प्राप्त होता है 2, 4, 6 सप्ताह तक वर्षा की शुरुआत न हो सकने से आदर्श वातावरण प्रभावित हो कर फसलों व पशुओं के जीवन-चक्र को भी प्रभावित करता है। वर्तमान में कृषि और फसलों व पशुओं में मौसम आधारित जानकारी दुर्लभ है। ऐसी बहुमुल्य जानकारी को चौ. स. कु. कृ. वि. वि. पालमपुर में अन्य संस्थाओं के सहयोग से एकत्रित किया और किसानों, प्रसार अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं नीति निर्माताओं के लाभार्थ आठ जिलों हमीरपुर, बिलासपुर, ऊना, काँगड़ा, सिरमौर, कुल्लू, मंडी और लाहौल स्पीति के लिए तैयार किया गया है।

भारतवर्ष के कुल 29 राज्यों में से हिमाचल प्रदेश एक पहाड़ी राज्य है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्र 5,50,000 हेक्टेयर है जिसमें से 11.94 प्रतिशत क्षेत्र में ही कृषि की जाती है। यह पश्चिमी हिमालय में स्थित सुन्दर पहाड़ों, उपजाऊ घाटियों, बारहमासी नदियों, बहुमूल्य वनों, अमुल्य वनस्पतियों और वन्य प्राणियों, खनिजों एवं संसाधनों से भरपूर एक समृद्ध संस्कृति और विविध रीति-रिवाजों का प्रदेश है। पश्चिम से पूर्व और दक्षिण से उत्तर तक इसकी ऊंचाई 350-7000 मीटर है। इस में तीन प्रमुख मौसम- ठंडा (अक्तूबर से फरवरी), गर्म (मार्च से जून) तथा वर्षा ऋतु (जुलाई से सितम्बर) पाए जाते हैं। अक्तूबर आते-आते ही रात्रि और सुबह के समय काफी ठंड पड़नी शुरू हो जाती है। दिसम्बर से मार्च तक 3000 मीटर ऊंचाई तक लगभग तीन मीटर मोटी बर्फ की चादर बिछ जाती है।

जून के अंत से बारिशें शुरू होती हैं और जुलाई तथा अगस्त में भारी वर्षा के कारण भूमि कटाव, बाढ़ व भूस्खलन, रोगों और कीड़ो के प्रकोप से उत्पादकता प्रभावित होती है। अप्रैल-मई तथा सितम्बर-अक्तूबर में ओलावृष्टि और दिसम्बर-जनवरी में पाला पड़ना एक सामान्य घटना मानी जाती है।

प्रदेश को चार कृषि जलवायु खण्डों में बांटा गया है। प्रदेश में साल-भर में दो वर्षा के मौसम होते हैं, जिस में एक गर्मियों में और एक सर्दियों में पाया जाता है इन दो वर्षा मौसमों के अनुरूप क्रमशः खरीफ व रबी की फसलें उगाई जाती हैं। द्वितीय खंड उपनम समशीतोषण है इस खंड में वर्ष 2000 तक खरीफ में लगभग 1500 मि. मी. वर्षा और 300 मि.मी. वर्षा रबी में प्राप्त होती थी अब वर्षा में कमी दर्ज की जा रही है, जोकि खरीफ में अधिक और रबी में कुछ कम पाई गई है। प्रथम खंड में बीजाई के समय दोनों सीजनों में और फसल पकने के दौरान रबी सीजन में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। द्वितीय एवं तृतीय खण्डों में सूखे की स्थिति के अतिरिक्त हवा और मिट्टी का कम तापमान रबी फसलों के अंकुरण के शुरुआती दिनों में और खरीफ फसलों के पकने के समय में फसल को काफी प्रभावित करता है। ऐसी दशा में फसलों की समय से पहले बीजाई की सिफारिश की जाती है क्योंकि प्रदेश में मात्र 17 प्रतिशत क्षेत्र में ही सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है इसलिए समय पर वर्षा न होने और अपर्याप्त सिंचाई के कारण समय पर बीजाई करना और फसल के परिपक्व होने वाले समय के दौरान पड़ने वाले सूखे से निपटना मुश्किल कार्य है। खरीफ सीजन के दौरान बीजाई के समय के अलावा फसलों को उगाने में ज्यादा समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है अपितु रबी सीजन के दौरान काफी लम्बे समय तक सूखे से रूबरू होना पड़ता है। सर्दियों में चतुर्थ खंड में हवा और भूमि के कम तापमान के कारण फसलों को गर्मियों के मौसम में सुनिश्चित सिंचाई के तहत ही उगाया जा सकता है। वर्षा पर आधारित खेती वाले क्षेत्रों में आमतौर पर वर्षा अनियमित और अनिश्चित होती है। वर्षा का यह व्यवहार कम से कम पांच प्रकार का पाया गया हैः

1. वर्षा के शुरू होने में ही काफी देरी हो सकती है
2. फसल चक्र के दौरान लम्बे समय तक बारिशें रूक सकती हैं
3. बरसात के मौसम की समाप्ति जल्दी हो सकती है
4. बरसात के मौसम की लम्बाई में बदलाव आ सकता है
5. वर्षा सामान्य से कम या अधिक हो सकती है

इन परिस्थितियों से निपटने के लिए निम्नलिखित वैकल्पिक प्रबंधों का सुझाव दिया जाता हैः

सारणी 1: वर्षा का उतार चढाव एवं फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव

क्र.सं.	वर्षा का उतार-चढ़ाव/प्रस्तुत विकल्प	फसलों पर प्रभाव
1.	वर्षा की शुरुआत में विलम्ब	फसल की बुआई में देरी होने के कारण फसल की अवधि में कमी
2.	वर्षा की जल्द समाप्ति	
अ.	फसल परिपक्व होने के समय में पानी की कमी	फसल के दानों का पूरा न भरना
व.	मध्यावधि सूखा	
	बुआई के तुरंत बाद	पानी की कमी के कारण अपर्याप्त पौध संख्या
	वनस्पतिक चरण के दौरान	तने की लम्बाई/ बढ़ाव, पत्तियों की चौड़ाई, टहनियों एवं उत्तकों पर हानिकारक प्रभाव
	पुष्प बनने के दौरान	परागण और निषेचन प्रभावित होने के कारण कम दाने और कम फलियाँ बनना
	परिपक्वता चरण के दौरान	दानों के पूरा न भरने के फलस्वरूप छोटे दाने बनना

सारणी 2: वर्षा का उतार-चढ़ाव एवं वैकल्पिक सुझाव

क्र.सं.	वर्षा का उतार-चढ़ाव	वैकल्पिक योजना तथा मध्यावधि सुधार
1.	वर्षा के शुरुआत में विलम्ब	
अ.	4 हफ्तों का विलम्ब	कम अवधि वाली वैकल्पिक फसलों की बीजाई करें
व.	1-2 हफ्तों का विलम्ब	कम अवधि वाली वैकल्पिक किस्मों का उपयोग करें
2.	वर्षा की जल्द समाप्ति	एंटीट्रांसपाइरेंट का छिडकाव करें, ज्वार-बाजरा को पशु चारे के लिए इस्तेमाल करें, जो फसल पक कर तैयार हो गई हैं उनकी कटाई कर लें
3.	मध्यावधि सूखा	
अ.	बुआई के तुरंत बाद	यदि पौधों की संख्या में कमी 20 प्रतिशत से कम हो तो परिस्थिति के अनुसार इस कमी को दोबारा बीज बो कर या पौधारोपण से पूरा करें
व.	वनस्पतिक चरण के दौरान	खेत को स्थानीय उपलब्ध सामग्री (फसल अवशेषों व घास आदि) से ढकें, साधारण नमक या एंटीट्रांसपाइरेंट का छिड़काव करें, आधे से एक तिहाई तक पौध संख्या को कम कर दें
स.	पुष्प बनने के दौरान	एंटीट्रांसपाइरेंट का छिड़काव करें. चारे के लिए ज्वार-बाजरे की कटाई या वर्षा के साथ खेत की रातुनिंग कर लें
द.	परिपक्वता चरण के दौरान	एंटीट्रांसपाइरेंट का छिड़काव करें, फसल के परिपक्व होने पर कटाई कर लें

सारणी 3: मौसमी तत्वों में उतार-चढ़ाव एवं वैकल्पिक सुझाव

मौसमी तत्वों में उतार-चढ़ाव	वैकल्पिक सुझाव
प्रचंड गर्मी	
गेहूं, सरसों, आम, लीची	सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर जीवन रक्षक सिंचाई का उपयोग करें
पाला एवं शीत लहर	
गेहूं, सरसों	सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर बारंबार हल्की सिंचाई का उपयोग करें
आम, लीची	सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर बारंबार हल्की सिंचाई का उपयोग करें, स्थानीय उपलब्ध सामग्री का इस्तेमाल करें, सिंचाई की सुविधा उपलब्ध न होने पर आग जला कर फसलों पर धुंए का आवरण बनाये रखें।

सारणी 4: खरीफ तथा रबी सीजन के दौरान वर्षा के उतार-चढ़ाव से निपटने के लिए फसलों की वैकल्पिक योजना

खरीफ सीजन		वैकल्पिक सुझाव	
वर्षा में उतार-चढ़ाव	सामान्य फसल प्रणाली	नई वैकल्पिक फसलें	सस्य विधियाँ
		कृषि जलवायु खंड प्रथम एवं द्वितीय में: माश, सोयाबीन, बेबीकोर्न, पॉपकॉर्न, तिल, लोबिया, हरी खाद फसलें, मक्की/ चारे के लिए ज्वार बाजरा कृषि जलवायु खंड तृतीय (ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र): माश, सोयाबीन, बेबीकोर्न, राजमाश, चारे के लिए मक्की।	5 प्रतिशत अधिक बीज दर एवं 25 प्रतिशत कम नत्रजन का उपयोग करें। दलहनी फसलों को सह फसल के रूप में लगायें। खेत को स्थानीय उपलब्ध सामग्री से ढकें। भूमि कटाव को रोकने के लिए घास लगायें।

(अगले अंक में जारी)

कहलूर का प्रसिद्ध जुग्गा सत्याग्रह

भारत की जनता हमेशा अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध संघर्षरत रही है। उत्पीड़न सहन करते रहना हमारी नियति नहीं है। अत्याचार के विरूद्ध यह आवश्यक नहीं कि हमने सशस्त्र क्रांति ही की हो। बहुधा आततायी को सही पथ पर लाने के लिये आत्म बलिदान एवं आत्मोत्पीड़न का सहारा लिया जाता रहा है। देश भक्तों ने आमरण अनशन व आत्मदाह आदि के द्वारा आततायी को झुकने के लिये मजबूर किया है। ऐसा ही एक उदाहरण बिलासपुर जिला के इतिहास में भी मिलता है जो आत्म बलिदान के द्वारा यहां के अत्याचारी शासक को प्रजा पर अत्याचार और जुल्म करने से रोकने में न केवल सहायक सिद्ध हुआ है बल्कि इतिहास में उसका दूसरा कोई सानी नहीं है। यह सत्याग्रह जुग्गा सत्याग्रह के नाम से विख्यात है।

बिलासपुर के गजेटियर में 'शशिवंश विनोद में 'हिस्ट्री ऑफ हिल स्टेट्स' में मियां अच्छर सिंह द्वारा रचित बिलासपुर की कहानी में नरोत्तम दत्त शास्त्री द्वारा लिखित 'बिलासपुर का राजनीतिक इतिहास' में तथा भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा रचित 'हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता का संक्षिप्त इतिहास' में इस घटना का संक्षिप्त और कहीं- कहीं विस्तृत रूप से वर्णन मिलता है।

घटना 1883 ई. की है। उस समय बिलासपुर (तत्कालीन कहलूर रियासत) में चन्देरी से आये हुये चन्देल राजवंश का ब्यालिसवां राजा अमर चन्द शासन करता था। राजा अमर चन्द के पिता राजा हीरा चन्द एक कुशल शासक और प्रजाहित चिंतक थे। उनके राज्य में प्रजा सुखी थी, लेकिन अमर चन्द को प्रशासन का कोई ज्ञान नहीं था। उसका पालन- पोषण राजमहलों की चार दीवारी में हुआ था, उसे कभी भी राज दरबार में बैठने या जनता में जाने का अवसर नहीं मिला था। जब राजा हीरा चन्द की मृत्यु हुई तो शासन की वास्तविक बागडोर बजीरों और कारिन्दों के हाथ में आ गई, उन्हें जनता से क्या प्रेम था? उन्होंने जनता पर राजा के नाम पर अनेकों कर लगा दिये। भूमि लगान को दोगुना कर दिया तथा राजा के मन में यह बिठा दिया कि जब तक सरकारी कोष में पर्याप्त धन नहीं होगा, कुशलतापूर्वक शासन नहीं किया जा सकता तथा यह भी कि प्रजा के साथ सख्ती से पेश आना ही कुशल राजा की पहचान है।

राजा ने सभी लगाये गये करों को सख्ती से वसूलने का फरमान जारी कर दिया। फिर क्या था? कारिन्दों की पौ बारह हो गई। राजा के ये बजीर और कारिन्दे भ्रष्ट थे। उन्होंने जनता से अभद्र एवं अमानवीय व्यवहार आरम्भ कर दिया। प्रजा त्राहि- त्राहि कर उठी। लोगों के प्रतिनिधि मण्डल बार- बार राजा से मिलने तथा जनता के इस उत्पीड़न की फरियाद करने सांडू के मैदान में आते, लेकिन या तो राजा साहिब को उनसे मिलने का समय ही नहीं होता और कभी- कभार जब वे मिलते भी तो बढ़ाई गई लगान तथा अपने कर्मचारियों के व्यवहार को उचित ठहराते तथा प्रजाजन को राजद्रोही की संज्ञा देकर खबरदार करते। लोग तंग आ गये और उन्होंने भी समझ लिया कि ऐसे राजा से क्या फरियाद करनी जो न बात को सुनता हो न उसे समझता हो। लोगों ने आपस में परामर्श करके ब्राह्मणों को इस समस्या का हल खोजने के लिये आगे आने का आह्वान किया।

जनता के आह्वान पर पन्तेहड़ा, कोट, ललहवाण तथा गेहड़वीं के ब्राह्मणों की पहली सभा पंतेहड़ा की दो ठाईयों (दुर्गा एवं पीपल की पूजा के लिये बनाई गई पत्थरों की स्थली) पर हुई, जिसमें तय किया गया कि राजा के अत्याचारों से प्रजा को मुक्ति दिलाने के लिये ब्राह्मणों को आत्म बलिदान देना होगा। पंतेहड़ा के पंडित गणेशा व सुन्दर बालम बलिदान के लिये तैयार हुये। नियमानुसार इन दोनों ने पंतेहड़ा ग्राम की पालंगरी थुईला में पीपल के वृक्ष के नीचे जुग्गे बनाये, उनमें अपनी अराध्य दुर्गा की मूर्तियां रखीं और उनमें बैठ गये। जुग्गे घास फूस की छोटी- छोटी झोंपड़ियों सी होती थी, जिन पर भगवां झण्डा लगाया जाता था। इनमें बैठने वाले सत्याग्रही एक सप्ताह तक एक समय फलाहार खाते थे।

तत्पश्चात एक सप्ताह निराहार रहकर जुग्गों में आग लगाकर आत्मदाह कर लिया करते थे। राजा अमर चन्द तक यह समाचार पहुंचा कि पंतेहड़ा में दो ब्राह्मण जुग्गों में बैठ गये हैं। राजा बड़ा हैरान हुआ कि यह कैसा

रोशन लाल शर्मा

आंदोलन है? न लड़ाई न दंगा बल्कि स्वयं को जला देना उससे हमें क्या फर्क पड़ता है? उसने कहा कि उन्हें जुग्गों में बैठने दो। तुम जनता से कर वसूली सख्ती से जारी रखो। दो सप्ताह जुग्गों में सत्याग्रह एवं अनशन करने के बाद दोनों सत्याग्रहियों ने आत्मदाह कर लिया। इस ग्राम के बुजुर्ग सुनाते हैं कि प्रत्यक्षदर्शियों ने उन्हें बताया है कि जिस समय जुग्गों में आग लगाई जा रही थी, वहां हजारों लोग शंख व घंटियां लिये उपस्थित थे तथा आकाश शंखों व घंटियों की आवाज से गूंज उठा था। जनता में भयानक रोष उबल रहा था, लेकिन राजा चिरनिंद्रा में तथा उसके कारिन्दे उत्पीड़न में व्यस्त थे। वही बात दोहराई जा रही थी कि रोम जल रहा था और नीरू बांसुरी बजा रहा था।

इस घटना पर विचार करने के लिये गेहड़वी में 1884 ई. में गुग्गा मंदिर परिसर में फिर कोट, पंतेहड़ा, ललहवाण तथा गेहड़वीं के ब्राह्मणों की बैठक हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि जनता को इस शोषण की चक्की से मुक्त करवाने तथा राजा को राजमद निंद्रा से जगाने के लिये और अधिक बलिदान दिये जायें। इस बार गेहड़वीं को बलिदान स्थली बनाने तथा पांच सत्याग्रही ब्राह्मणों को जुग्गों में बिठाने का निश्चय किया गया। नियत तिथि को जुग्गे बनाये गये तथा उनमें पांच आत्म बलिदानी सत्याग्रही ब्राह्मण अपने- अपने इष्ट देवों को साथ लेकर बैठ गये। इस बार लोगों में पंतेहड़ा की घटना के कारण अधिक जागृति आ गई थी। अतः जुग्गों के पास प्रतिदिन दूर- दूर से लोग आकर एकत्रित होते, राजा के अत्याचारों तथा उसके कारिन्दों के कुकर्मों पर चर्चा करते तथा भविष्य की योजनायें बनाते। ये लोग सत्याग्रहियों के उत्साह को बढ़ाते तथा राजा से बदला लेने की प्रतिज्ञा करते।

राजा अमर चन्द को पता चल चुका था कि पंतेहड़ा में दो सत्याग्रही ब्राह्मण जुग्गों में जल मरे हैं तथा इससे जनता में रोष बढ़ रहा है। उसे डर था कि यदि गेहड़वीं में भी पंतेहड़ा के इतिहास की दोहराई हो गई तो सारे राज्य में विद्रोह हो सकता है, जिसे दबाना उसकी पुलिस के वश में नहीं होगा। अतः उसने रियासत के तहसीलदार मियां निरंजन सिंह को पुलिस फोर्स के साथ उन सत्याग्रहियों को गिरफ्तार करके बिलासपुर लाने के लिये गेहड़वीं भेजा। उस दिन सत्याग्रहियों को जुग्गों में बैठे हुये नौ दिन ही हुये थे, जब उन्हें पता चला कि राजा की फोर्स उन्हें गिरफ्तार करने के लिये गेहड़वीं आ रही है तो उन्होंने उसी समय जुग्गों में आग लगा दी। यह समाचार सारे क्षेत्र में आग की तरह फैल गया। हजारों लोग गेहड़वीं में

राजा हीरा चन्द की मृत्यु हुई तो शासन की वास्तविक बागडोर बजीरों और कारिन्दों के हाथ में आ गई, उन्हें जनता से क्या प्रेम था? उन्होंने जनता पर राजा के नाम पर अनेकों कर लगा दिये। भूमि लगान को दोगुना कर दिया तथा राजा के मन में यह बिठा दिया कि जब तक सरकारी कोष में पर्याप्त धन नहीं होगा, कुशलतापूर्वक शासन नहीं किया जा सकता।

एकत्रित हो गये। जब मियां निरंजन सिंह गेहड़वीं पहुंचा तो लोग अपने क्रोध को काबू में नहीं रख पाये। शांतिप्रिय सत्याग्रह ने विद्रोह का रूप ले लिया। प्रजा और पुलिस में भयानक मुठभेड़ छिड़ गई, जिसमें सत्रह आंदोलनकारी शहीद हो गये तथा सैंकड़ों घायल हुये। लोगों ने भी जो शस्त्र मिला उठा लिया। गुलाबा राम नड्डा के पास बंदूक थी, उसे निरंजन सिंह को गोली मार दी। लोगों ने उसके घायल शरीर को जलते हुये जुग्गों में फैंक दिया और जला डाला। यह देखकर पुलिस भाग खड़ी हुई। राजा ने ब्रिटिश सरकार से सहायता मांगी। तत्काल ब्रिटिश सेना को गेहड़वीं भेजा जिसने हर प्रकार के दमनात्मक तरीके अपनाकर इस भयानक विद्रोह को दबा दिया।

इस घटना के बाद पंतेहड़ा के 34, ललहवाण के 15, कोट के 21, गेहड़वीं के 47 तथा अन्य ब्राह्मण ग्रामों से 23 ब्राह्मण परिवार रियासत छोड़कर कांगड़ा चले गये। गुलाबा राम नड्डा को छः वर्ष की कड़ी कैद की सजा देकर सरयून के किले में बंदी बनाया गया। 14 लोगों को बस्सेह के किले में तथा 12 को बच्छरेटू के किले में कड़ी कैद की सजा दी गई। विद्रोहियों की जमीन जायदाद जब्त कर दी गई।

ऐसा कहा जाता है कि इस दमन व ब्राह्मण हत्या के बाद राजा अमर चन्द अशांत रहने लगा। उसे प्रायः नींद नहीं आती थी और जब वैद्यराज की दवाई से उसे नींद भी आ जाती थी तो जुग्गे और सत्याग्रही शहीद ब्राह्मण दिखाई देते। कई-कई बार नींद में चीख पड़ता था तथा उसके एहलकार दौड़कर उसे जगाकर उसकी चीखों के बारे में पूछते। राजा-रानी और सेवक सब परेशान रहने लगे।

ऐसा भी कहा जाता है कि राजा अनेकों बार सोते- सोते पलंग से गिर पड़ा था। राजा के ज्योतिषियों ने बताया कि यह सब ब्रह्म हत्या का परिणाम है। प्रायश्चित के तौर पर राजा ने रियासत छोड़कर गये हुये सभी ब्राह्मण परिवारों को सादर वापिस बुला लिया जिनकी जमीन जायदाद जब्त की थी वह वापिस कर दी। शहीदों के परिवारों को 'सासण' व पेंशन लगा दी। बढ़ाई हुई लगान मुआफ कर दी, भूमि लगान नकद कर दी गई तथा बेगार हटा दी गई। इस प्रकार पुनः कहलूर रियासत में शांति स्थापित हो सकी।

जुग्गा आंदोलन स्पष्टतः एक सत्याग्रह आंदोलन था। आत्मोत्पीड़न एवं आत्म बलिदान के साथ-साथ देवी- देवता एवं धार्मिक शक्ति की भावना से अत्याचारी प्रशासन में न्याय व सदाचार की भावना जगाना इस सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य था, जिसमें यह पूर्णतः सफल रहा।

प्रधानमंत्री नौरंग की युक्ति से मुक्त हुआ कांगड़ा किला

आक्रमणकारी गोरखे कांगड़ा किला के अंदर प्रवेश करने में असफल हो रहे थे क्योंकि किला मजबूत था और राजा संसार चन्द के सैनिकों ने हिम्मत नहीं हारी थी। किला का मुख्य द्वार तोड़ने के प्रयास में गोरखा सेनापति नैन सिंह की गोली लगने से मुत्यु हो गई थी। दूसरे सेनापति अमर सिंह थापा को कुछ सूझ नहीं रहा था। गोरखों के संग उस समय गढ़वाली चित्रकला के जनक, ब्रज भाषा के कवि भी साथ थे जिनका नाम मोला राम था। मोला राम चित्रकार, कवि और भविष्य वक्ता भी थे। उन्होंने गोरखों को कांगड़ा पर आक्रमण न करने की सलाह भी दी थीः-

तुम दस ग्यारा बर्सहि ताहीं
काजी रहोगे पच्छम माहीं
किला कांगड़ा सिंह दबाबै
तुमको सतलुज पार धपावैं।

मोला राम के सलाह के विरूद्ध गोरखा सेना ने कांगड़ा पर आक्रमण कर दिया। उस समय कांगड़ा के राजा संसार चन्द कटोच थे। कवि मोला राम लिखते हैंः-

नैन सिंह जब ही हते,
पाई फतह कटोच
अमर सिंह काजी कियो हर्ष
सोक ही सोच।

नैन सिंह की मृत्यु होने पर नेपाल के राजा गिर्वाण शाह ने रूद्रवीर और दलभंजन पांडे को कांगड़ा किला कब्जा करने के लिये भेजाः-

रूद्रवीर चौतरिया आये
दलभंजन संग माहि पठाये
लियो कांगड़ा तिनहुं घिराई
चहूं तरफ फौजेंहि पिलाई।

राजा संसार चन्द ने दलभंजन के साथ संधि प्रस्ताव भेजा। संसार चन्द की इस संधि पर अमर सिंह थापा ने विरोध प्रकट किया। वे क्रोधित हुये और नेपाल नरेश को पत्र लिखकर विरोध जतायाः-

संसार चन्द्र बहु घूसहि दीनी
दलभंजन चौतरिया लीनी
किला छाड़ी मिलि बैठ दोई
करी हमारी सब ही खोई
जो इह पलटि तहां को जावै
किला कांगड़ा हमहुं छुटावैं।

नेपाल महाराजा ने पत्र पढ़कर दोनों सेनापतियों को वापिस नेपाल बुला लिया और बलभद्र को अमर सिंह की मदद के लिये कांगड़ा जाने को कहा। मोला राम के कलम सेः-

दलभंजन और चौतरा,
दोनों लये बुलाय
कुंवर वीर ही भद्र जो,
दीन्यो सीघ्र पठाय
वीरभद्र तुम बीर हो,
करो काज इति आज
किला कांगड़ा फौज ले,
जाव कहयो महाराज।

वर्ष 1809 में फागुन मास में बलभद्र अपने दलबल के साथ चैत्र मास आरम्भ में कांगड़ा पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगे। कांगड़ा के किले को गोरखों ने घेर लिया था जिससे संसार चन्द कटोच ने एक युक्ति

उदय ठाकुर

से काम लिया। उन्होंने प्रधानमंत्री नौरंग को अमर सिंह थापा के पास भेजा। कवि मोला राम के शब्दों मेंः-

कहयो वचन मृदु मधुर महाई
हौं राजा नैं दियो पठाई
कायल हो नृप बिनती कीनी
इह अरजी करि तुम सौं दीनी
किला कांगड़ा हम हूं छाड़यो
अब हम कौं तुम बाहर काढ़यो।
अपना करि कैं हम कौं राखो
बचन यहै नौरंगा भाखो।

अमर सिंह थापा को प्रधानमंत्री नौरंग पर विश्वास हो गया और खुश होकर नौरंग ने कहाः-

किला कांगड़ा छाड़ि कै,
आओ हमरे पास
रहो चाकरी मांहि तुम,
पूर्न होय सब आस।

प्रधानमंत्री नौरंग ने अमर सिंह थापा से कांगड़ा का घेरा हटाने की प्रार्थना की, अमर सिंह थापा घेरा हटाने को तैयार हो गये। तब राजा संसार चन्द ने युक्ति पूर्वक पंजाब केसरी रणजीत सिंह को मदद के लिये प्रार्थना की और एक कवितामय चिट्ठी लिखी। यह चिट्ठी कांगड़ा कवि द्वारा लिखी गई थीः-

पाती महि हाथी लिखि दीन्यो
आसपास ही कीचर फीन्यो
कीचहिं बीच फंसै जब हाथी
काढ़े गधा न काढ़ै साथी
सिंह सिंह को काज सुधारैं
सूर सूर सौंही ललकारैं
साह साह को काज चलावैं
राजा राजा मदत को आवैं
हमहूं बहोत आज लौं थामी
पूरब वेरी पश्चिम जामी
तातै यको करो बिचारा
पाती यांचि लगै नहिं बारा
किला कांगड़ा तुम को दीन्यो
नातर इहैं गौरखा लीन्यो।

यह कविता पढ़कर महाराजा रणजीत सिंह ने तत्काल अपनी सिख सेना को कांगड़ा जाने का आदेश दिया और राजा संसार चन्द को किले से बाहर ले आये। गोरखे पराजित हो गये थे। महाराजा रणजीत सिंह ने गोरखों से कहा तुम फौरन सतलुज के पार हो जाओ और कभी फिर आने की जुर्रत न करना। कवि मोला राम लिखते हैंः-

अमर सिंह तब सीस नवायो
कर सलाम सतलुज को आयो
सूखे ठौर में बैठयो जाई
कांतीपुर इह खबर पौंछाई
किला कांगड़ा सिंह ने लीन्यो
हमको सतलज वारहिं दीन्यो।
हम सूखे अब ठीरहिं आये
सतलज वार सब दबाये
रणजीत सिंह सिरमौर के सांही
बलभद्र गयो दूण के तांही
श्रीनगर बहादुर भंडारी
दसरथ खत्री संग तिन्हारी
हमैं हुक्म अब जो कछु होई
करें चाकरी हम हूं सोई
रणजीत सिंह संग फौज घनेरी
थकै आंख वा तर्फ जो हेरी
लीनी जिन कसमीरहि सारी
खुरासान मुलतानहि भारी
इह आरजी नैपाल पठाई
भीमसेन जर्नेल बंचाई
महाराज सुनि के जो रिसाये
बखतावर बसन्यात पठाये
कहो जावो श्रीनगर के मांही
बैठ करो तुम काज तहों ही।

यहां श्रीनगर से अभिप्राय गढ़वाल के श्रीनगर से है और दूण से अभिप्राय देहरादून से है। यहां कांतीपुर से अभिप्राय नेपाल की राजधानी काठमांडू से है।

राजा जनक व अष्टावक्र की कथा

किशन चन्द चौधरी

मुनि अष्टावक्र एक बार राजा जनक की राजसभा में पहुंचे। राजा ने उनका उचित स्वागत-सत्कार किया और एक ऊंचे आसन पर उन्हें स्थान दिया। अष्टावक्र के स्वभाव में तब तक बहुत रुखापन आ चुका था। उन्हें यह अभिमान भी हो गया था कि मैं बहुत बड़ा ब्रह्मवेता हूं। अहंकारवश उन्होंने राजा जनक से प्रश्न कर दिया, 'राजा जनक! तुम तो अपने आपको विदेह कहते हो, यह तुम्हारा झूठा अभिमान है। अरे, तुम किस प्रकार के विदेह हो, जबकि ठाटदार महलों में रहते हो, सुन्दर स्त्रियों और दास- दासियों से सेवा कराते हो, छप्पन प्रकार के उत्तम भोजन करते हो, कोमल व गुदगुदे गद्दों पर सोते हों। इशारे पर दास- दासियां हाथ बांधे खड़े रहते हैं। दुनिया भर के राजा तुम्हारे नाम से कांपते हैं। संसार की कोई वस्तु तुम्हारे लिये दुर्लभ नहीं है। इन समस्त भोगों और ऐश्वर्य के बीच रहते हुये, इन्हें भोगते हुये तुम विदेह होने का पाखण्ड किस प्रकार करते हो? विदेह तो हम हैं। हमने अपनी तमाम इंद्रियों को वश में कर लिया है। हम महीनों और वर्षों तक वृक्ष के पत्ते खाकर अथवा केवल वायु का भ्रमण करके समाधिस्थ होकर ब्रह्म का चिंतन करते हैं। सारी वासनाओं को हमने बलपूर्वक नष्ट कर दिया है और अपने शरीर को सुखाकर हमने कांटे के समान कर लिया है। हमने इतने कष्ट सहे हैं, विदेह हम हैं या तुम हो।'

राजा जनक यह सुनकर हंस पड़े। उन्होंने आदरपूर्वक ऋषि की अभ्यर्थना की और कहा, 'मुनिवर! सब बातों का उत्तर उतावलेपन में नहीं दिया जा सकता। आप आये हैं तो कुछ दिन अपने इस सेवक के पास ठहरिये। इसका आतिथ्य स्वीकार कीजिये। तब आपको अपने प्रश्नों के उत्तर भी मिल जायेंगे।' अष्टावक्र शांत हुये और राजमहल में ठहर गये। राजा जनक ने उनकी सेवा-सुश्रुषा और आराम की भली-भांति व्यवस्था कर दी। वह बड़े सुख और आनन्द के साथ राजमहल में रहने लगे। इसी प्रकार कुछ दिन बीत गये। एक दिन राजा जनक ने अपने अनुचर को आज्ञा दी, 'जाओ! नगर से किसी ऐसे दीन-दुखी मनुष्य की खोज कर के लाओ, जो अपने जीवन से निराश हो चुका हो, आत्मघात तक करने को तैयार हो, जिसका दुनिया में कोई सहारा न हो, जो सब प्रकार से पतित, कलंकित और अयोग्य हो।'

राजा की आज्ञा का पालन किया गया। अनुचर ने एक ऐसे ही व्यक्ति को ढूंढकर राजा के सामने प्रस्तुत कर दिया। राजा ने आज्ञा दी, 'इस व्यक्ति को आज से हमारे समान ही साधन-सम्पन्न समझा जाये। जिस प्रकार हमारी आज्ञा का पालन होता है, ठीक उसी प्रकार इसकी आज्ञा का भी पालन किया जाये। जिस प्रकार का ऐश्वर्य और सुख भोग हमारे लिये उपस्थित है, वैसा ही इस व्यक्ति के लिये भी उपस्थित किया जाये तथा इसकी प्रत्येक उचित और अनुचित आज्ञा का पालन किया जाये। जो कोई भी इस काम में चूक करेगा, उसे प्राण दण्ड दिया जायेगा।'

यह सारी बातें ऋषि अष्टावक्र के सामने हुईं। वे राजा जनक की इस अद्भुत आज्ञा को सुनकर आश्चर्य चकित हो गये। उन्होंने अपने मन में कहा कि राजा लोग भी सनकी हुआ करते हैं। जो उनके मन में तरंग आई, वही कर बैठते हैं। परन्तु उस व्यक्ति के प्रति अष्टावक्र का कौतुहल जरूर बढ़ गया। वे बड़े ध्यान से उसकी दिनचर्या देखने लगे। दर्जनों दास- दासियां उसकी सेवा में उपस्थित हो गये और एक बढ़िया सा महल उसे रहने को दे दिया गया। उस व्यक्ति को सम्पूर्ण राजसी ठाट-बाट से सुसज्जित कर दिया गया। वह भूल गया उन दिनों को, जब वह निरीह भिखारी था। द्वार-द्वार जाकर रोटी के टुकड़े की भीख मांगता था। अब वह राजा के सामने सेवकों पर हुक्म चला रहा था। अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन करता था। उत्तम शय्या पर सोता था। उसकी प्रत्येक इच्छा और आज्ञा का पालन किया जाता था। देखते ही देखते उसका रंग- ढंग बदल गया। वह खूब हृष्ट-पुष्ट और सुखी हो गया। अष्टावक्र उसके अंदर वह परिवर्तन देखते और राजा जनक की मूर्खता पर हंसते थे। इस प्रकार कुछ दिन और व्यतीत हो गये। इस बीच अष्टावक्र ने राजा से कई बार अपने प्रश्न का उत्तर मांगा, किन्तु राजा ने हर बार हंस कर उनके प्रश्न को टाल दिया।

फिर एक दिन राजा जनक ने अपने विश्वसनीय सेवक से उस व्यक्ति का हाल-चाल पूछा। अनुचर ने विनीत भाव से बताया कि महाराजा की आज्ञा का यथावत पालन हो रहा है और वह आदमी बहुत सुखी और संतुष्ट है। तब राजा ने एक नया आदेश दिया। उन्होंने अनुचर से कहा, 'सारे नगर में ढिंढोरा पिटवा दो कि कल सायंकाल सूर्यास्त से पहले उस व्यक्ति को राजमहल के प्रांगण में सूली पर चढ़ा दिया जायेगा। जो कोई भी उस दृश्य को देखना चाहे वह उस समय राजमहल में आकर देख सकता है।'

राजकर्मचारी राजा की इस विचित्र आज्ञा को सुनकर आश्चर्य चकित रह गये। अष्टावक्र ने सुना तो उन्होंने कुटिल हास्य के साथ यही कहा कि निश्चय ही राजा पागल हो गया है, जो इस प्रकार भयानक निर्णय कर रहा है। ऐसे राजा के प्रमाद और क्रोध का क्या ठिकाना। इससे तो दूर रहना ही अच्छा है। अब अकारण ही उस बेचारे भिखारी की जान चली जायेगी। परन्तु राजाज्ञा का पालन किया गया। ढिंढोरा पीटने वाला जब राजमहल की खिड़की के नीचे खड़ा होकर राजाज्ञा सुनाकर ढोल पीटने लगा तो उस अभागे ने भी अपने भाग्य के उस फैसले को सुन लिया। सुनते ही वह बौखला उठा और घबराकर कहने लगा, 'यह क्या बात है, किसलिये मुझ बेकसूर को सूली पर चढ़ाया जा रहा है? किसलिये मेरे साथ यह अनर्थ किया जा रहा है, यह तो घोर अन्याय है। दुहाई है महाराज की। दुहाई है सब नागरिकों की। मुझ गरीब को बिना कोई कारण दंडित किया जा रहा है। मेरी रक्षा होनी चाहिये। यह राज भोग, सुख और ऐश्वर्य मुझे कुछ नहीं चाहिये। मुझे भीख मांगकर खाना मंजूर है। मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो।'

लेकिन उसकी करुण पुकार व्यर्थ साबित हुई। उस पर कड़ा पहरा लगा दिया गया। परन्तु सब प्रकार के सुख और ऐश्वर्य भोगने की उसकी छूट पहले की तरह बरकरार रही। अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पकवानों से भरे थाल उसके सामने लाये गये। उसने पागलों की तरह उन्हें उठाकर फैंक दिया। स्वच्छ और आरामदायक गद्दे उसे काटने लगे और आपे से बाहर होकर उसने उन्हें फाड़ डाला। दास एवं दासियां जब उसकी सेवा के लिये हाजिर हुये तो उसने उन्हें डांटकर भगा दिया।

उसकी दशा उस मछली के समान हो रही थी जो जीवित ही तवे पर भूनी जा रही हो। वह छटपटा रहा था। चीख और चिल्ला रहा था। दुहाई दे रहा था किन्तु उसकी चीख पुकार नक्कारखाने में तूती की आवाज ही प्रतीत हो रही थी। यह सब देखकर अष्टावक्र ने राजा से कहा, 'राजन! यह आप किस प्रकार का खेल खेल रहे हो इस गरीब के साथ? एक निरपराध व्यक्ति को सूली पर चढ़ा देने जैसा काम क्या आपके लिये शोभा देता है?'

सुनकर राजा ने मुस्कराकर अष्टावक्र से कहा, 'हे ऋषिवर! आप जाकर उसे समझायें कि वह खाना खाये और आराम से सोये। सूली तो उसे कल संध्या में दी जायेगी। फिर अभी से उसे इतनी बेचैनी क्यों है?'

परन्तु अष्टावक्र के वहां जाने और उस व्यक्ति को समझाने का कोई लाभ नहीं हुआ। अंत में राजा ने उसे अपने सामने ले आने की आज्ञा दी और उससे कहा कि उसे जो कुछ कहना है वह कह दे।

उस भिखारी ने हाथ जोड़कर सिर झुकाकर कहा, 'महाराज! मैं यह जानना चाहता हूं कि मुझ निरपराध को सूली पर चढ़ाने का आदेश क्यों दिया है? आखिर मेरा अपराध क्या है?'

राजा ने कहा, 'तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। तुम्हें सूली हम अपनी इच्छा से दे रहे हैं।'

'यह तो अन्याय है। महाराज! मैं तमाम राज सभा की दुहाई देता हूं कि मुझे इस अन्याय से बचाया जाये।'

राजा ने कहा, 'इसमें अन्याय क्या है? जब तुमको भीख मांगते हुये राज महल में बुलाकर समस्त राज- ऐश्वर्य सौंप दिया गया तब तो तुमने नहीं पूछा कि मैंने ऐसे कौन से सत्कर्म किये हैं कि मुझे भिखारी से राजा बनाया जा रहा है। तुम बड़ी मौज से, मौज बहार में मग्न हो गये और अपने को राजा ही समझने लगे। तुम्हें स्वप्न में भी यह ख्याल नहीं आया कि किस पुण्य के बदले में तुमको ऐश्वर्य मिला। अब जब तुमको सूली पर चढ़ाया जाने वाला है तो तुम कारण पूछते हो। इसका कोई कारण नहीं है। मेरी इच्छा थी, मैंने तुम्हें भिखारी से राजा बनाया। अब मेरी इच्छा है कि तुम्हें सूली पर चढ़ाकर मार दूं। चले जाओ तुम्हारी कोई बात नहीं सुनी जायेगी। कल सूर्यास्त के समय तुम्हें सूली चढ़ा दिया जायेगा। परन्तु याद रखो कि आज का दिन बीच की रात और कल का पूरा दिन तुम्हारे लिये है। इससे पहले तुम्हें मारा नहीं जा सकता। इस समय के अंतराल में खूब आनन्द का उपयोग करो, खूब मौज करो, खाओ-पिओ और दुनिया का सुख लूटो। कल सायंकाल जब तुम्हारा अंत समय आ पहुंचे तो सूली पर चढ़ जाना।' राजा ने फिर अष्टावक्र से कहा, 'ऋषिवर! अब आप ही इस बदनसीब को समझाइये कि यह अभी से क्यों इतना कष्ट उठा रहा है। इससे कहिये कि इस बीच यह खूब ठाट से भर पेट स्वादिष्ट भोजन करे और सुख की नींद सोये।' यह सुनकर अष्टावक्र बोले, 'राजन! यह तुम कैसी बातें कर रहे हो? अरे जिसके सिर पर मौत मंडरा रही हो और जो कल मरने वाला हो, वह कैसे खाये-पिये और कैसे किसी सुख का भोग करे? इसको मैं कैसे समझा सकता हूं?'

राजा जनक! तुम तो अपने आपको विदेह कहते हो, यह तुम्हारा झूठा अभिमान है। अरे, तुम किस प्रकार के विदेह हो, जबकि ठाटदार महलों में रहते हो, सुन्दर स्त्रियों और दास- दासियों से सेवा कराते हो, छप्पन प्रकार के उत्तम भोजन करते हो, कोमल व गुदगुदे गद्दों पर सोते हों। इशारे पर दास- दासियां हाथ बांधे खड़े रहते हैं। दुनिया भर के राजा तुम्हारे नाम से कांपते हैं। संसार की कोई वस्तु तुम्हारे लिये दुर्लभ नहीं है। इन समस्त भोगों और ऐश्वर्य के बीच रहते हुये, इन्हें भोगते हुये तुम विदेह होने का पाखण्ड किस प्रकार करते हो?

राजा ने कहा, 'ऋषि श्रेष्ठ! मौत तो इसकी कल आने वाली है, अभी तो नहीं आ रही?' अष्टावक्र ने उत्तर दिया, 'राजन! जिसकी मृत्यु निश्चित है वह कैसे सुख और ऐश्वर्य का भोग कर सकता है?' सुनकर राजा ने हंस कर कहा, 'बैठ जाइये ऋषिवर! मैं आपको आपके प्रश्न का उत्तर देता हूं। जिसकी मृत्यु निश्चित है वह योग्यता से ही भोगों को उस प्रकार भोग सकता है जैसे कि मैं भोगता हूं, जिसने जान लिया है कि मृत्यु तो ध्रुव सत्य है। इस भाग्यहीन को इतना तो भरोसा है कि इसकी मृत्यु में अभी दो दिन शेष हैं, किन्तु मुझे तो इतना भी पता नहीं कि किस क्षण मेरी मृत्यु आ जायेगी। फिर भी मैं किसी भी पल मृत्यु को गले लगाने के लिये तैयार हूं। आप देख रहे हैं कि मैं कितना शांत हूं। यह धन-सम्पदा, राजमहल, ठाट-बाट, ऐश्वर्य, दास-दासियां, उत्तम से उत्तम भोजन, उत्तम से उत्तम वस्त्र, ये सब छोटे- बड़े मेरी सेवा में संलग्न हैं। मैं इनका अधिपति हूं। दास नहीं। मृत्यु के पश्चात ये सब मुझ से छूट जायेंगे, इसका मुझे तनिक भी ऐसा मोह नहीं है, जैसा कि इस भाग्यहीन को है। क्योंकि उसे ज्यों ही पता चला कि कल जब वह मर जायेगा तो ये सारी वस्तुयें इनसे छूट जायेंगी तो यह अशांत हो गया। यह उन वस्तुओं का दास है। यह उन वस्तुओं का भूखा है। यह मृत्यु को सहन नहीं कर सकता। इन सब वस्तुओं का बोझ इसके सिर पर लदा हुआ है, किन्तु मैं शांत हूं, निश्चिंत हूं। हे ऋषिवर! यही कारण है कि लोग मुझे विदेह कहते हैं। आपने अपना उदाहरण दिया कि आप वृक्ष के पत्ते खाकर अपनी तृप्ति करते हैं। आपने यह भी कहा कि आपने अपनी इंद्रियों पर पूरी तरह नियंत्रण कर लिया है, क्या यही आपकी तपस्या है? यही आपका वेदेहत्व है? आपने अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण क्यों किया? इसलिये कि आप इनके स्वामी नहीं हैं। इन पर आपका कोई अधिकार नहीं है। कहीं वे आपके साथ कोई घात न कर जायें, इसलिये आपने इन्हें बांध कर रख छोड़ा है। इन्हें इनके विषयों से वंचित कर दिया है। आप जीते जी मृतकवत, हृदय होते हुये भी हृदयहीन, जीवन होते हुये भी जवानीहीन हैं। आपने इस जीवन में अपने आपको नष्ट कर दिया। अब आगे के लिये आपके लिये कौन सा मार्ग हो सकता है?'

जनक के मुख से ऐसा सारगर्भित उपदेश सुनकर अष्टावक्र कुछ भी उत्तर न दे सके। वे मौन रहकर सिर्फ सोचते ही रह गये। राजा जनक ने उनके मर्मस्थल को छू लिया था। वे जान गये थे कि राजा जनक सचमुच ही सच्चे ब्रह्मवेता हैं। ऋषि अष्टावक्र को इस प्रकार गंभीर मुद्रा में देखकर जनक भी समझ गये कि अष्टावक्र को मेरी कही बातों का मर्म समझ में आ गया है। अगले दिन उन्होंने उस भिखारी को छोड़ देने का ऐलान कर दिया।

वास्तु शिल्प का बेजोड़ नमूना-बनासर का किला

हरीश कुमार

हिमाचल प्रदेश के इतिहास में गोरखों के इस क्षेत्र में अधिपत्य का उल्लेख आता है। गोरखों ने तत्कालीन कुछ पहाड़ी रियासतों को अपने अधीन किया तथा उनका इन रियासतों पर वर्ष 1815 तक नियंत्रण रहा। वर्ष 1815 में अंग्रेजों ने इन रियासतों को गोरखों से मुक्त करवाया। इसके लिये यहां के शासकों ने अंग्रेजों से मदद की गुहार की थी।

इस दौरान गोरखों ने अनेक किलों का निर्माण करवाया जो आज राज्य की समृद्ध वास्तु शिल्प धरोहर के रूप में उपलब्ध हैं। आज भी इनमें कुछ किले मौजूद हैं, कुछ अभी भी ठीक हाल में हैं तो कुछ खण्डहर में तबदील हो गये हैं। गोरखों की इस क्षेत्र में उपस्थिति के साक्षी ये किले बिलासपुर, शिमला, सिरमौर तथा सोलन जिलों में हैं।

हिंडूर, कहलूर, बघाट, अर्की, महलोग, कुठाड़, सिरमौर, जुब्बल, क्योंथल रियासतें गोरखों के अधीन थीं जो अब बिलासपुर, सोलन, सिरमौर तथा शिमला जिलों में आती हैं। मेजर जनरल डेबिट ओचरलीग के नेतृत्व में वर्ष 1815 में अंग्रेजी सेना ने गोरखों से इस क्षेत्र को मुक्त करवाया। आज भी मलौण, बनासर, सुबाथु तथा घार का किला गोरखों के अधिपत्य की याद ताजा करवाता है।

सोलन जिले के कुमारहट्टी से 22 किलोमीटर दूर कुमारहट्टी-नाहन मार्ग से भोजनगर-परवाणू सड़क पर चीड़ के घने जंगलों के मध्य ऊंची पहाड़ी पर बनासर किला मौजूद है। 200 वर्षों से अधिक समय से मौजूद इस किले की मजबूत दीवारें तथा वास्तु शिल्प गोरखों की बहादुरी की याद ताजा करवाता है। इस किले के इतिहास व निर्माण का उल्लेख किताबों में उपलब्ध नहीं है। इसके निर्माण बारे कुछ का मत है कि इसे अमर सिंह थापा द्वारा बनवाया गया। जबकि सुबाथु व मलौण किले का उल्लेख अंग्रेजी इतिहासकारों तथा सैन्य अधिकारियों द्वारा किया गया है।

समय के थपेड़ों से यह किला खण्डर में तबदील हो रहा है। इसके संरक्षण के लिये वर्ष 2008 में वन विभाग को कार्य सौंपा गया था लेकिन उनके पास पुनर्निर्माण की विशेषज्ञता न होने के कारण उन्होंने भी इसमें असमर्थता व्यक्त की। किले की दीवारों की मरम्मत इसलिये नहीं हो सकती क्योंकि इसका निर्माण तत्कालीन वास्तु शिल्प पर आधारित है तथा ऐसा निर्माण कार्य व सामग्री उपलब्ध ही नहीं है।

किले का आकार शतरंज के हाथी की तरह है। एक मान्यता यह भी है कि इसका निर्माण मैदानी इलाकों से आने वाले शत्रुओं पर नजर रखने के लिये किया गया था। किले की दीवारों में बने झरोखे आज भी इसकी सच्चाई बयां करते हैं। जिस समय गोरखों ने किलों का निर्माण करवाया था, उस समय की परिस्थितियां अलग थीं। पर आज भी इस किले को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। इस किले से परवाणू, कालका, पिंजौर, चण्डीगढ़, कसौली व डगशाई का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। इस किले तक परवाणु के समीप दत्यार रे रोपवे द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। यह किला परवाणु स्थित होटल टिम्बर ट्रेल से केवल चार किलोमीटर दूर है। किले से एक किलोमीटर दूर करालघाट का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल भी है जहां पर हर साल हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। इसी प्रकार का एक किला कुमारहट्टी-नाहन मार्ग पर स्थित जोहड़जी के समीप भी था जो अब पूर्ण रूप से नष्ट हो चुका है। यदि बनासर के किले के रखरखाव की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो शायद एक और ऐतिहासिक धरोहर अस्तित्व खो देगी। इस प्रकार की ऐतिहासिक धरोहरों को अगर हम संजोकर न रख पाये तो शायद हमारी आने वाली पीढ़ियां इन धरोहरों को कभी नहीं देख पायेंगी।

लेख

नामदेव कहै कहुं आइये न जाइये

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध महात्मा नामदेव जी (संवत 1270-1350) हमें समझाते हैं कि कुल मालिक सबके अंदर है और अंदर से ही पूरे गुरु, अपने समय के पूरे महापुरुष के जरिए ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। यह संसार जीव के लिये कर्मभूमि है। यहां जैसी करनी, वैसी भरनी। हमारा प्रारब्ध, जो आज हम भोग रहे हैं, पिछले किये कर्मों के फलस्वरूप है। जो आज हम कर रहे हैं आगे भोगेंगे और यह चक्कर चला ही रहता है। इसी से देही के बंधन है, जन्म-मरण का चक्कर है। जहां भी हम कर्म करके जन्म लेते हैं, हमें दुखों का ही सामना करना पड़ता है। निचली योनियों की बात ही क्या करनी है, मनुष्य जन्म में हमें कहां सच्ची खुशी प्राप्त होती है ? सभी खुशी की तह में दुःख ही दुःख छिपे हैं-नानक दुखिया सभ संसार (गुरु नानक), सकल जीव जग दीन दुखारी (गोस्वामी तुलसीदास), चारी वर्ण में काउ न देखो, जा कूं चिंता

✍ डॉ. आत्मा राम

नाही (चरणदास), तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया हो (कबीर)! तो मनुष्य क्या करे ? संत-महात्मा फरमाते हैं कि हर हालत में संतोष कर, मालिक को याद करता रहे। हमें हमेशा मालिक की रज़ा में, भाणे में खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए। क्यों जो कुछ होता है, वस्तुतः हमारे कर्मों का ही नतीजा होता है। इसलिए नामदेव जी समझाते हैं कि हमें हर दशा में मालिक की भक्ति करनी चाहिए -'जौ राजु देहि त कवन बड़ाई। जौ भीख मंगवाई त किआ घटि जाई।।'

कुल मालिक सब जीवों का एक है, उसी रचनात्मक शक्ति ने सब रचना की है। रचना अनेक हैं, अनेकता में है, परन्तु स्वयं एक है- एक, सत, नाम, करता, निरभउ, निर्वैरु, अकाल मूर्ति अजूनी, सर्वासर्वा है। नाम देव जी की बानी है -'एक अनेक वियापक पूरक जत देखउ तत सोई।' हमारा उसली रूप आत्मा है-मन व शरीर नहीं-और आत्मा परमात्मा का अंश है, भाग है, जुड़ा है। और परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है। क्या कहते हैं नामदेव जी ? 'घर घर अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी।' हमारी आत्मा अपनी अंशी, परमात्मा से विसाल कर, मिल कर ही सहज सुख, शांति, मुक्ति प्राप्त कर सकती है। यहां तो वह अपने प्रीतम से बिछुड़ कर मन-माया के देश में दुःखी हो, चौरासी की कैद, चौरासी लाख योनियों में भटक रही है। अतः संत नामदेव जीव को समझाते हैं कि वह भक्ति कर, नाम की कमाई करे और इस तरह वह जन्म-मरन के बंधन से हमेशा के लिये छूट कर, अपने असली घर आ जाए-'तू हरि भजु मन मेरे पदु निरवान।। बहुरि न होइ तेरा आवन जान।।' यही उसके लिए उत्तम कर्म है, यही करना जरूरी है-रजा में रहते नाम की उपासना। एक और जगह भी वे यही उपदेश करते हैं -'हरि हरि करत मिटे सभि भरमा।। हरि का नाम लै उत्तम धरमा।।' मतलब क्या -'हरि नांव हीरा हरि नाम हीरा। हरि नाम लेत मिटे सब पीरा।'

इसी विचार को आप और ढंग से भी समझाते हैं। परमात्मा सब प्राणियों, जीव-जन्तुओं का एक है, वह सर्वासर्वा है, उसकी रचना है -सब कुछ उसी का किया हुआ है। उसी ने बहुतों को भ्रमों-वहमों में रखा है। माया के मोह-जाल में फसाया हुआ है। पर, किसी किसी को वह अपने सांझी, ज्ञान, चेतना, दया-मेहर करके देता है। यह सब कुछ जीव के अपने बस में नहीं है। उसकी मौज है, मर्जी है। बहुतों को संसार में भुलाए रखता है, उलझनों में डाले रखता है। परन्तु जिन्हें अपने पास बुलाना, अपने में मिलाना चाहता है, जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति देना चाहता है, उन्हें अपने मिलने का ज्ञान, युक्ति भेद देता है। जीव को बख्शना या न बख्शना उसके हाथ में है, उस की मौज पर निर्भर करता है। हालांकि जीव सब उसके बंदे है। इसलिए महात्मा नामदेव जी फरमाते हैं -सम तैं उपाई भरम भुलाई।। जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई।।' भाव यही है कि सो चेते जिस आप चेताई। हमारा मालिक से विसाल, मिलाप उसकी दया, मेहर, कृपा पर निर्भर है।

परन्तु कुलमालिक जब किसी को भवसागर से तारना चाहता है, अपने पास बुलाना चाहता है, उसकी मौज जीव को हमेशा के लिये जन्म-मरन से मुक्त करने की होती है -तो वह क्या करता है ? उसने क्या कुदरती कानून बनाया है ? सभी महात्माओं की तरह, संत नामदेव जी कहते हैं कि तब वह जीव को पूरे व वक्त के गुरु से मिलाप करवाता है। वह गुरु, मुर्शिद, दरवेश, महापुरुष असल में मनुष्य के चोले में उसी का रूप होता है। आप स्पष्टतया फरमाते हैं -'जा के मस्तिष्क लिखिओ करमा, जो भज परि है गुरु के सरना।' फिर क्या होता है ? जीव गुरु की शरण में, उनके बताए तरीके से, उपदेश से, भक्ति कर, नाम की अंतर में ही कमाई करके जीवित ही मालिक को साक्षात कर, अंततः मालिक में समा जाता है। नामदेव जी एक शब्द में विस्तार से समझाते हैं 'जउ गुरुदेउ त मिलै मुरारी। जउ गुरुदेए त उतरै पारि।'' जीव के सारे भ्रम, संशय, वहम, अंधविश्वास, मौत का डर आदि सब दूर हो जाते हैं-'जउ गुरुदेवउ ता ससां टूटै। जउ गुरुदेए ता जम ते छूटै।' भाव यह -'जउ गुरुदेए त भवजल तरै। जउ गुरुदेए त जनमि न मरै।'

क्या और भी कोई ढंग से मालिक से विसाल करने का, मुक्ति हासिल करने का ? नामदेव का मत है कि ऐसा कोई साधन नहीं है -'सतगुरु मिलै त सहसा जाई।। किस हउ पुजउ नदर न आई।' कहते हैं कि पहले आप कर्मकाण्डी थे। परन्तु उनके मन को संतुष्टि न होई। अपने गुरु विसोवा खेचर साहिब की शरण में आ कर उन्होंने नाम की कमाई की और परमसंत बन गए। उन्होंने अपनी बानी में शरीयत का, कर्मकाण्ड का सरवत विरोध किया। एक पद में आप लिखते हैं-तीर्थों में केवल पत्थर और पानी ही है....पत्थर की मूर्ति जो कि ईश्वर मानी जाती है कभी बोलती नहीं, फिर वह दुनियावी दुःख कैसे दूर कर सकती है ?' एक और जगह वे वर्णन करते हैं-'एकै पत्थर कीजै भाउ।। दूजै पाथर धरिए पाउ।।' और सीधा तर्क देते हैं -'जे ओहु देउ त ओहु भी देवा।' और अपनी नाम-कमाई के आधार पर बताते हैं -जा कारण त्रिभुवन फिरि आए। सो निधान घट भीतर पाए।।' और हम को दावे से संदेश देते हुए कहते हैं -'नामदेव कहै कहुं आइये न जाइये।। अपने राम घर बैठे पाइये।।'

सारांशतः संत नामदेव जी का रुहानी उपदेश यही है कि जीव भाणे, मालिक की रज़ा, मौज में रहे, निर्मल रहन, जीवन, रहते हुए प्रभु की भक्ति करें-इसी में उसका कल्याण है, भलाई है-यहां भी और आगे भी। वह पूरे महापुरुष की संगति में रहकर नाम की कमाई करे, आंतरिक रुहानी यात्रा करे, जीवन में ही मालिक को साक्षात करे। आपके वचन हैं- 'भाई रे इन नयननि हरि पेय पेयो।' पर इसका जरिया क्या है ? उन का उत्तर है -'आतम राम देह धरि आयो, तामै हरि कौ देखो।'

कविता

मेरा फैसला

तुझे जहां पाऊं,
वहीं होगा विराम मेरा।
भीष्म बने चाहे यथार्थ की पीड़ा,
अटल रहेगा फैसला मेरा।
पथ की ओर,
कूच कर चले,
मुकाम पर रुकेंगे कदम।
मरूभूमि के विलान में,
सुवास पुष्प खिलाकर लूंगा दम।
अगम दुर्गम राहों पर,
नवीनता की खोज तेरी।
संबल पास न तेरे,
समष्टि में नई सृष्टि तेरी।
मनोनयन से सपना,
ओझल न दूंगा होने।
लक्ष्य की सोंधी खुशबू,
न दूंगा खोने।
असीम सागर की लहरों में,
सीमा का स्पर्श है लक्ष्य मेरा।
कड़कती धूप सोख ले जिसे,
निर्झरी स्फूटित करना फैसला मेरा।।

✍ आचार्य राजेन्द्र कुमार

लघु कहानी

मुरगन के तेवर

"साधु-संन्यासी गृहस्थियों से कहीं अधिक दुनियादारी कारोबारी हो गए हैं। केवल ब्याह करके पत्नी घर में नहीं लाए, बाकी तो बढ़िया गृहस्थियों से बढ़कर उनका ताम-झाम देखा जा सकता हैं।" मुरगन एक ही साँस में यह सब कह गए।

"बात तो आपकी सोलह आने सही है। लेकिन खरी-खरी सुनने की सामर्थ्य तो गृहस्थियों में भी नहीं। हमें तो आप जो मर्ज़ी कह लीजिए।" सिद्धयोगी अपनी दाढ़ी और मूंछों को सहलाते हुए बोले। मुरगन ने एक बार फिर वार किया :- "अरे! सिद्धयोगी जी, आप लोगों की तो बात ही कुछ और है। हाथी के दांतों के समान, खाने के और तथा दिखाने के और।" पास बैठे मुलथान और अयोध्या की हंसी निकल गई। सिद्धयोगी भी ज़ख्मी शेर की भान्ति पलटवार में कहने लगे, "साहब! हम लोगों ने तो सिर में धूल डाली हुई है, दुनिया की राह में बैठकर बुरा - भला सब सुन लेते और चुपचाप हज़म भी कर जाते हैं। किन्तु गृहस्थियों की कहें तो सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।"

मुरगन ने एक बार फिर विष बुझा तीर छोड़ा:- "ठीक है। ठीक महाराज ।। गृहस्थियों की तो एक ही गृहस्थ और परिवार हैं। आज कल साधु संन्यासियों के वेश में आप जैसे सिद्ध योगियों के सैंकड़ों मन्दिर, मठ, संस्थान और आश्रम हैं। करोड़ों की सम्पत्तियां और बूटियों के कारोबार। राम-राम भगवान ही बचाए आजकल ऐसी ढोंगी बाबाओं से।"

सिध्दयोगी की बोलती तो बन्द नहीं हुई किन्तु तन.बदन में दुख, संताप, पीड़ा, वेदना, क्रोध और बदला लेने के अनेक भावों का विद्युतगति से झन झनाहट भरा संचार होने लगा। वे बोले, "मुरगन जी, हमने तो आपकी सभी बातें सुनकर अमृत समान पी लीं और कटाक्षों को सहन कर लिया किन्तु यदि आप गृहस्थियों के अनेक काले कारनामों में से एक का पर्दाफाश करें तो बड़ी मिर्ची लगती है।"

असल में सिद्धयोगी अपने मन्दिर और आश्रम संम्बधी एक कोर्ट केस में मुरगन के कार्यालय में बैठे थे। निचली कचहरी में केस हारने के बाद किसी ने उन्हें सलाह दी थी कि इस क्षेत्र में मुरगन ही एक ऐसे वकील हैं, जो बड़े से बड़े पेचीदा केसों को जीतने का रिकार्ड रखते हैं। तभी सिध्दयोगी ने अपना वकील बदलकर केस उनके हवाले कर दिया था। आज उसी सिलसिले में पेशी थी और बात ही बात में संन्यासी और गृहस्थियों की तुलनात्मक चर्चा शुरु हो गई थी। चर्चा में रस आता देखकर बाहर बरामदे में बैठे कुछ मुवक्किल भी कान खड़े करके

● डॉ. पीयूष गुलेरी

सुनने लग गए थे और बीच - बीच कभी मंद - मंद तो कभी ऊँचे स्वर में हँस हँसकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे थे। कुछ सुस्ताकर और दबी हँसी हँसकर मुरगन बोले :- "बाबा जी महाराज! कान खोलकर सुनिए! हम अपना कारोबार ईमानदारी से करते हैं। भले ही सच को झूठ और झूठ को सच करके दिखाएँ, यह तो हमारा व्यावसायिक धर्म है। किन्तु अपने जीवनकाल में हमने अपना दामन साफ रखा है। कोई उंगुली नही उठा सकता।"

सिध्दयोगी अपनी तरुणावस्था में उसी कॉलेज में पढ़े थे, जहाँ मुरगन रहा करते थे। तब उन्होंने नई.नई वकालत शुरु की थी। वह भी जवान और इलाके में अपने लटकों.झटकों के लिए जाने जाते थे। तब कॉलेज के छोकरों में यह चर्चा थी कि मुरगन को इमरजैंसी कमीशन ऑफिसर के पद से इसलिए निकाल बाहर कर दिया गया था कि उन्होंने एक चतुर्थ श्रेणी की अपनी महिला कर्मचारी के साथ छेड़खानी की थी। शुरू-शुरू में वहाँ चर्चा का बाज़ार गर्म था किन्तु समय बीतते - बीतते लोग भूल-भुला गए। सिध्दयोगी को उनकी यह करतूत संजीवनी की तरह काम आई और कहने लगे:- "मुरगन जी। अगर हिम्मत है, तो एक छोटी सी बात कहूँ ? लेकिन आप वादा करें कि सचाई सुनने का सामर्थ्य रखेंगे। नाराज़ नहीं होगें। आपा नहीं खोएँगे और न ही तिलमिला कर कोई भद्दी प्रतिक्रिया करेंगे।"

'कहो-कहो बाबा! हमारा बड़ा कलेजा है। वकालत करते हैं, खरी-खोटी सब सुनते हैं।" मुरगन ने कहा। "तो सुनिए" सिध्दयोगी बोले, "आपको इमरजैंसी कमीशन ऑफिसर पद से हाथ इसलिए धोने पड़े थे कि आपने बेहयाई से अपनी ही अधीनस्थ एक महिला कर्मचारी की इज्जत पर हाथ डाल दिया था। जिस समय आप वहाँ से बर्खास्त होकर घर लौट आए थे, उस समय मैं यही कॉलेज मैं पढ़ता था। आपका यह कारनामा तब शहर में गर्म था।"

मुरगन को काटो तो खून नहीं। खिसियानी बिल्ली की तरह बगलें झांकने लगे फिर इधर-उधर देखकर बात बदलते हुए घड़ी देखकर बोले "चलिए, चलिए। बड़ा समय हो गया। अब कचहरी ही में मिलते हैं।" और वे उठकर अन्दर चले गए।

सिद्धयोगी की कचहरी में आज ही पेशी थी। कचहरी पहुँचकर जब वह मुरगन की कुर्सी के पास पहुँचे तो मुरगन उनके साथ आँख नहीं मिला रहे थे और न ही उनके साथ बातचीत करने को तैयार थे। कुछ देर इधर उधर घूम-फिर कर अपने केस की सुनवाई के बारे में जब उन्होंने मुरगन से पूछा तो मुरगन बड़ी रुखाई से बोले :- "योगीराज! हम तो कैरेक्टर-लैस बर्खास्त अफसर हैं। आप जैसे सिध्दयोगी के केस लड़ने के अधिकारी ही नहीं। आप अपने लिए कोई और वकील देख लें, मैं आपका केस नहीं लड़ूँगा।" यह कहकर कागज़ों का लिफाफा सिद्धयोगी की ओर ज़ोर से पटक दिया।

मुरगन के तेवर देखकर सिध्दयोगी सन्न थे। किंकर्त्तव्यविमूढ़! होश फाख़्ता!! करें, तो क्या करें ?

क्या आप जानते हैं?

अधिक ऊंचाई पर स्याही-भरे पेन में से स्याही बाहर क्यों निकलती है?

जैसे-जैसे ऊंचाई बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे वायु का दाब और घनत्व कम होता जाता है। जब आंशिक रूप से स्याही-भरा पेन ऊंचाई तक ले जाया जाता है, तो इसमें से स्याही बाहर निकल जाती है, क्योंकि पेन के अंदर की वायु का दाब, बाहर की वायु के दाब से अधिक हो जाता है।

1. उस देश का नाम बताइए, जिसने प्रथम उपग्रह 'स्पुतनिक' अंतरिक्ष में छोड़ा था ?
2. गांधी जी ने विश्व शांति के लिए कौन से मार्ग बताये थे ?
3. भारत के झण्डे का आकार आयताकार है तथा इसकी लम्बाई और चौड़ाई के बीच कितना अनुपात है ?
4. भारत की प्रथम युद्ध क्षेत्र मिसाइल का नाम बताए ?
5. भारतीय सैन्य अकादमी कहां पर स्थित है ?
6. भारत में करेंसी नोटों का मुद्रण और आपूर्ति कहां की जाती है ?
7. सतलुज नदी का उदगम स्थल कौन सा है ?
8. हिन्दुस्तानी कंठ संगीत की रचना का सबसे पुराना रूप कौन सा है ?
9. प्रिंटिंग प्रेस की खोज किसने की थी ?
10. किस हिन्दू राजा को भारत का नेपोलियन भी कहा जाता है ?
11. भारत का वो कौन सा राज्य है जिसके पास मरीन-कमाडो है ?
12. जोजिला दर्रा जोड़ता है ?
13. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 11 अक्तूबर, 2014 को देश के गांवों को विकसित करने के लिए कौनसी योजना आरम्भ की ?
14. अंग्रेजों ने शिमला को ग्रीष्म राजधानी किस वर्ष में बनाया ?

प्रस्तुति : रीना नेगी

उत्तर- 1.सोवियत संघ, 2. प्रेम व अहिंसा, 3. 3:2, 4. अग्नि, 5. देहरादून में, 6. सिक्युरिटी प्रेस, नासिक द्वारा, 7. मानसरोवर, 8. ध्रुपद, 9. जॉन जू गुटनबर्ग (जर्मनी) , 10. समुद्रगुप्त, 11. गुजरात, 12. लेह और श्रीनगर, 13. आदर्श ग्राम योजना, 14. 1864 ।

लेख

नैतिक मूल्य के सृजन में अभिभावकों का योगदान

● डॉ. कुन्दन समटा

आज जिस तरह से विद्यार्थियों के अन्दर नैतिक मूल्यों का हनन दिखता जा रहा है इसको संवारने के लिए घर का वातावरण तथा स्वयं अभिभावकों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। आज हरेक अभिभावक पैसे (धन) की इस अंधी दौड़ में इस तरह से संलिप्त हो गया है कि अपने बच्चों के भविष्य एवं संस्कारों को संवारने का उन्हें समय ही नहीं मिल पा रहा है। विशेष अध्ययन में पाया गया है कि जो अभिभावक पति पत्नी दोनों सरकारी नौकरी में कार्यरत हैं उनके बच्चों को घर में रखे अटेंडेंट देखभाल कर रहे हैं। उन नन्हें मुन्ने बच्चों के लिए मां की ममता भी खरीद कर लानी पड़ रही है। कई बार तो बच्चों को बन्द कमरे में रखा जाता है तथा बाहर से ताला लगाया जाता है। जब तक दोनों घर नहीं लौटते हैं। तो आज हम कैसे संस्कारी समाज की स्थापना कर सकते हैं ? सरकारी मुलाजिमों के साथ तो अक्सर ऐसी घटनाएं ज्यादा होती है। परिजन अपनी अमूल्य 'धरोहर' बच्चों के साथ समय नहीं बीता सकते हैं। जिससे बच्चों एवं अभिभावकों के बीच का समन्वय, संस्कारों आदि की दूरियां बढ़ती जा रही है। आधुनिकता की इस अंधी दौड़ ने परिजनों के बीच चिड़चिड़ापन थकान, मानसिक परेशानियों को बढ़ा दिया है। जिसके कारण आपसी मतभेद, कलह, झगड़े, द्वेष आदि की भावना परिवार में उत्पन्न हो रही है। संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। आपसी दायरा संकीर्ण हो गया है। रिश्ते भी कम होने लगे हैं। शहरीकरण के इस युग में गांव वीरान होने लगे हैं। उक्त सभी कारणों से विद्यार्थी भी अपने संस्कारों, कार्यों, रीति-रिवाजों तथा परम्परागत सांस्कृतिक धरोहर, पकवानों, संस्कृतियों आदि को भूल रहे हैं तथा वे पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगने लगे हैं। जिससे नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है जो सम्पूर्ण परिवेश के लिए बहुत भयानक है। समाज में आज नैतिक मूल्यों का पतन इसी कारण हो रहा है। मात्र तीन साल के बच्चे को परिजन स्कूल भेजना शुरू करते है परन्तु फिर भी नैतिक मूल्यों में गिरावट दर्ज की जा रही है। बच्चे के ऊपर व्यर्थ में तनाव थोपा जा रहा है। हरेक मां बाप अपने बच्चे को शीर्ष में देखना चाहते हैं। जिसके लिए घर का वातावरण सौहार्द होना जरूरी है। परिजनों के बीच बढ़ती नशे की प्रवृत्ति तथा घर में पति-पत्नी की लड़ाई, सामाजिक अभद्रता, पश्चिमी पहनावा, मीडिया की अश्लीलता पारम्परिक पौष्टिकता का अभाव, पारम्परिक सांस्कृतिक धरोहर का अवमूल्यन, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था, पारम्परिक पकवानों का अभाव बच्चों में नैतिक मूल्यों के हनन का मुख्य कारण है। जो कि आने वाले समाज के लिए बहुत बड़ी समस्या है।

बढ़ती नशाखोरी, घटते संस्कारों ने समाज की जड़ें खोखली कर दी है। बिगड़ते परिवेश एवं कम संस्कारों के पौधे अभिभावक स्वयं आरोपित कर रहे हैं। क्योंकि वे मात्र विद्यालयों में शिक्षकों पर ही बच्चों की जिम्मेवारी सुनिश्चित करते हैं। बेचारा शिक्षक क्या करें? कानून ने हाथ काट लिए हैं। वरन् तो शिक्षक समाज को सुधारने का आईना था, प्रतिबिम्ब था। परन्तु आज की परिस्थितियों ने असहाय बना दिया है। कानून के अनुसार, डांटना, प्रताड़ना, दण्ड देना, फेल करना, जुल्म बना दिया है। इसलिये ये हालात शिक्षा प्रणाली में दिख रहे हैं।

बढ़ती नशाखोरी, घटते व बिगड़ते संस्कारों ने समाज की जड़ें खोखली कर दी है। बिगड़ते परिवेश एवं कम संस्कारों के पौधे अभिभावक स्वयं आरोपित कर रहे हैं। क्योंकि वे मात्र विद्यालयों में शिक्षकों पर ही बच्चों की जिम्मेवारी सुनिश्चित करते हैं। बेचारा शिक्षक क्या करें ? कानून ने हाथ काट लिए हैं। वरन् तो शिक्षक समाज को सुधारने का आईना था, प्रतिबिम्ब था। परन्तु आज की परिस्थितियों ने असहाय बना दिया है। कानून के अनुसार, डांटना, प्रताड़ना, दण्ड देना, फेल करना, जुल्म बना दिया है। इसलिये ये हालात शिक्षा प्रणाली में दिख रहे हैं।

भले ही आज कागजों में शिक्षा ढांचा सुदृढ़ है परन्तु वास्तविक स्थिति बिल्कुल भिन्न है। जबकि प्राचीन समय में गुरुओं का आदर सत्कार देवताओं जैसा होता था। आधुनिक कानून व्यवस्था ने शिक्षा के ढांचे को बिगाड़ दिया है। शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए चाहे सर्व शिक्षा अभियान हो, रूसा अभियान हो प्रदेश में शिक्षा ढांचा बुरी तरह गिर चुका है। क्योंकि बच्चों को फेल होने का डर नहीं है। नई शिक्षा पद्धति मात्र प्रमाणपत्र प्राप्त करने वाली शिक्षा प्रणाली को अमल में ला रही है। शिक्षा की प्राचीन तकनीकें बहुत अच्छी थी। विद्यार्थी भी संस्कारित हुआ करते थे। परन्तु आज आधुनिक तकनीकों में तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं ने शिक्षा में गुणवत्ता नहीं अपितु पतन लाया है।

आज दसवीं तथा बारहवीं पढ़े-लिखे बालक को गुणा, भाग तथा सामान्य प्रार्थना पत्र लिखने का स्तर नहीं है। आधार भूत ज्ञान शून्य है। इसमें सुधार के लिए आम जनता अर्थात् अभिभावकों को भी जागरूक होना पड़ेगा सबसे पहले शिक्षा के स्तर एवं संस्कारों के लिए मां-बाप घर का वातावरण सौहार्द बनाए घर में बच्चों के सामने स्वयं लड़ाई न करें। अनुशासन से बात करें। गाली गलोच न दें। सभ्य भाषा का प्रयोग करें। आध्यात्मिकता पर ध्यान दें। बच्चों से घर में हरेक काम करवाएं, सभ्य पहनावा करवाएं, घर में बनी वस्तुओं को प्राथमिकता दें, अपने सगे सम्बन्धियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करें।

सरकार से भी आग्रह है कि शिक्षा प्रणाली को बोझिल न बनाएं बल्कि कुछ आधारभूत विषय ही पांचवी कक्षा तक पढ़वाएं जाने चाहिए। जिनमें नैतिक शिक्षा, गणित या हिन्दी भाषा का ज्ञान एवं संस्कृति तभी इस शिक्षा प्रणाली में सुधार हो सकता है। अर्थात् मूल्यों के सृजन में अभिभावकों का ज्यादा योगदान होना चाहिए। अपने दैनिक जीवन की अभिव्यस्थता से हटकर अपने बच्चों के अन्दर अच्छी बातों, संस्कारों, कर्मों आदि को ढालना चाहिए। अभिभावक समाज में बदलाव ला सकते हैं। स्वयं भी विस्मृत दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। तभी सभ्य समाज की स्थापना की जा सकती है।

कविता

मीत मेरे

मीत मेरे मैं अब तुमको कैसे भुलाऊं
भूल गया जो गीत उसे कैसे सुनाऊं

अविरल नयनों से बहती जो अश्रुधारा
इन आंखों को बतला कैसे मैं समझाऊं
मीत मेरे मैं अब तुमको कैसे भुलाऊं।

तुम्हारी अविस्मृत स्मृतियां हैं रूलातीं
पुनः पुनः हैं वे मुझको स्मृत हो आतीं।

दूर कहीं तुम चले गए पर फिर भी साथी
लगता है पास से तुम हो मुझे बुलातीं।

तुम्हें पास होने की यह कैसी अनुभूति
कैसे तुमको क्या मैं अब यह बतलाऊं
मीत मेरे मैं अब तुमको कैसे भुलाऊं।

हर वह वस्तु जो घर में थी तुमने लाई
अपनी अपनी जगह सहेज कर थी सजाई।

अब उसमें मुझको तुम ही दृष्टिगोचर होती
प्रथम बार ज्यूं निकट मेरे थी तुम मुस्काई।

इस नीरस से जीवन को मैं कैसे साथी
फूलों से भरने को मैं बसन्त बुलाऊं
मीत मेरे मैं अब तुमको कैसे भुलाऊं।

कभी कहीं भी छोड़ मुझे थीं जब तुम जाती
कैसे तुमको रहना है मुड-मुड बतलातीं।

खान-पान का ध्यान सभी है रखना कहतीं
नन्हें बालक को जैसे है मां समझातीं।

तुम जब दूर गईं मुझसे तो कुछ न बोला
तुम बिन अपना ध्यान मैं अब कैसे रख पाऊं
मीत मेरे मैं अब तुमको कैसे भुलाऊं।

● मित्र भूम्पलवी

लघुकथा

परिश्रम का फल मीठा

एक लड़का था। वह बहुत नटखट था। वह पढ़ता नहीं था तथा काम भी नही करता था। जब अध्यापक कुछ समझाते थे तो वह इधर-उधर देखता रहता था। वह घर में अपनी मां को बहुत तंग करता था। उसकी हर दिन घर में पिटाई होती थी। लेकिन उस पर कोई असर नहीं पड़ता था। एक दिन उसकी मां ने बताया कि हिमालय पर एक पेड़ उगा है वह बहुत ही सुंदर है। उस पेड़ पर एक चमकता हीरा है। यदि वह हीरा किसी को भी मिल जाए तो वह मनुष्य कुछ कर सकता है। उस हीरे को तभी पा सकते हैं अगर मनुष्य कड़ा परिश्रम करे। उस बालक ने सोचा कि हीरे से तो अपने लिए बहुत सारी चीजें बनाऊंगा। तब उसने कड़ा परिश्रम करने का निर्णय लिया। वह बहुत बुद्धिमान बन गया। हर वर्ष अच्छे अंक प्राप्त करता। वह कड़े परिश्रम से एक बड़ा आदमी बन गया। उसे पता चला कि हीरे में कुछ नहीं रखा। परिश्रम करके सब कुछ होता है। मां की एक सीख ने उसे जीवन में सफलता पाने तथा बड़ा बनने को प्रेरित किया। तभी तो सच कहा गया है -परिश्रम का फल भी मीठा होता है।

● पंकज कश्यप

रंग भरो

● सर्बजीत

आयुर्वेद का उदगम स्रोतः हिमाचल

हिमाचल में औषधीय जड़ी-बुटियों का अपार भण्डार है। खानदानी वैद्य पुश्त-दर-पुश्त इसकी जानकारी अपने वारिसों को देकर समाज सेवा में अपने कबीलों को भी गौरवान्वित महसूस कराते थे। इसमें इनके सहयोगी पशु चराने वाले ग्वाले होते थे जो खेत, खलिहान, वीरान घासनियों के साथ जंगलों में घूमते-घूमते चप्पे-चप्पे से वाकिफ होते थे। ये घुमन्तू गद्दी, गुज्जर व ग्वाले जगह-जगह अपने पशुओं को चराने के साथ-साथ वन औषधियों को एकत्र करके वैद्यों के खानदानी सफाखाने तक पहुंचाकर, बक्शीश भी पाते थे। इनमें निर्मित घरेलू नुस्खों व औषधियों को ही आयुर्वेदिक दवाइयों या पद्धति का नाम दिया गया है। इन देसी दवाइयों से जमींदार, मजदूर, किसान, गरीब, आदिवासियों व यहां तक माल-पशु का इलाज भी वैद्यंगी व चलंगी नाम से करते थे। इनका प्रभाव भी चमत्कारिक होता था, क्योंकि इन्हें शुद्ध एवं सम्यक रूपेण गहन पहचान करके ही ग्रहण किया जाता था। कई जहरीली जड़ी-बूटियों का शोध करके परीक्षण किया जाता था और इस दौरान कई बार सामूहिक व व्यक्तिगत हादसे भी होते थे। कई नीम-हकीमों के कारण आमजन को खतरा-ए-जान अक्सर बना रहता था। इसी आड़ में ओझा व चेलों का भी गोरख-धन्धा चलता था व आज भी बदस्तूर चल रहा है। कालान्तर में आयुर्वेद का विकास व परिवर्धन करने वाले उच्च खानदानी-वैद्यों के पुण्य प्रयास से जीवन-रक्षक विज्ञान की विधा दुनियां की पहली सुव्यस्थित सस्ती व बिना साइड-इफैक्ट की आयुर्वेदिक चिकित्सा-पद्धति के रूप में प्रगति के शिखर पर लागातार आगे बढ़ती गई। शल्य-कर्म, शल्य-चर्म व अस्थि-शल्य चिकित्सा पद्धति भी हिमाचल प्रदेश में प्रचलित रही है व आज भी दूर-दराज के ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों में खानदानी वैद्यों की देख-रेख में बदस्तूर प्राथमिक उपचार के रूप में चल रहा है। हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी आयुर्वेद को अक्षुण्ण बढ़ाया है। इस पहाड़ी प्रदेश में आयुर्वेद-चिकित्सा का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव है कि साधारण रोगों में जैसे गला खराब, सर्दी-जुकाम, खांसी, सिर दर्द, चर्मरोग, पेटदर्द, वायुरोग, पित-कफ, रीगन (साटिका) का इलाज आस-पास पैदा होने वाले पेड़-पौधों व औषधीय जड़ी-बूटियों से शीघ्र लाभ व कम खर्च में हो जाता है। परन्तु ऐसी परिस्थितियों में इन जड़ी-बुटियों की जानकारी व महत्व का ज्ञान होना जरूरी है।

आज भी हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी-मानुष में इन आयुर्वेदिक जड़ी-बुटियों के प्रति दृढ़ विश्वास स्पष्ट रूप से देखने में आता है। वंश परम्परागत जड़ी-बूटी चिकित्सा अनुभवों का विशाल भण्डार हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण व दूरदराज क्षेत्रों में अभी भी पाया जाता है, परन्तु इसे सुरक्षित एवं सरंक्षित करने के उपाय अभी भी पूर्णतया सन्तोषजनक नहीं है।

● नागेन्द्र सिंह नेगी

लेकिन ऐसा लगता है कि आमजन आज भी कुछ एक रोगों को छोड़कर एलोपैथिक चिकित्सा से पूरी तरह आश्वस्त नहीं है। मरीज महंगी अग्रेंजी दवाइयां खाने पर थोड़े समय के लिए ठीक तो हो जाता है, परन्तु कुछ और नई बीमारियों का उदय हो जाता है। आयुर्वेदिक औषधियों से इस प्रकार के दुष्परिणाम नहीं होते हैं। आयुर्वेदिक इलाज बिल्कुल सस्ता व टिकाऊ थोड़ा-सा लम्बा पर रोग को जड़ से खत्म कर देता है। जंगलों में वन्य प्राणियों को भी औषधीय गुणों से भरूपर जड़ी-बुटियों की पूर्ण जानकारी होती है। जंगली जानवरों को भी ज्ञान होता है कि उन्हें कब कौन-सी घास व जड़ी-बूटी खानी चाहिए या नहीं खानी चाहिए। जिससे वे अपना व बच्चों का उपचार तो करते ही हैं, साथ-साथ अगली पीढ़ियों को भी सिखाते हैं। बदहजमी होने पर कुत्ते-बिल्ली विशेष बूटी खाकर उल्टियां करते हैं, नेवला जहरीले सांप से लड़ने के बाद बूटी खाता है, भालू लड़ाई के बाद गदूस नामक पौधे के पत्तों को चबाकर अपने जख्मों में भर लेता है। सभी जंगली मादाएं गर्भवती होने पर मोर-गटा नामक विशेष मिट्टी कैल्शियम की कमी पूरी करने के लिए खाती है। इस प्रकार प्रकृति ने सभी प्राणियों के रोगों का उपचार प्राकृतिक रूप से प्रकृति में ही निहित किया है। जिसका हम मानव जाति को निरोग्य रहने के लिए कुदरत की देन का फायदा उठाना चाहिए।

देवभूमि हिमाचल प्रदेश में पाये जाने वाले औषधीय गुणों से भरपूर पेड़-पौधों व जड़ी-बुटियों की जानकारी, महत्व का ज्ञान होने के साथ-साथ अगली पीढ़ियों में प्रचार-प्रसार करना चाहिए, ताकि सदियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही पहाड़ी आयुर्वेदिक पद्धति कहीं विलुप्त न हो जाए।

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला 26 नवम्बर, 2014

लेख

महान कलाकार सरदार सोभा सिंह

भारत देस संता,महात्मा वीरां कन्ने कलाकारां दी भूमि है। इसा धरतिआ बिच कई कलाकारां नै अपणी कला दा जोहर दसया है। उन्हां कलाकारां च सरदार सोभा सिंह भी इक थे। उन्हां दी कलाकारी चित्रकारी दे रूप च बड़ी ही मन्नियो जांदी है। सरदार सोभा सिंह जी दा जन्म पंजाब राज्य दे जिला गुरदासपुर दे ग्रांये हरगोबिन्दपुर च 29 नवम्बर,1901 च होया। इन्हां दे पिता दा नां देवा सिंह कन्ने माता दा नां इच्छरा देवी था। इन्हां दे पिता सेना च नौकरी करदे थे। माता दा देहांत ताल्लु होया जाल्लु इन्हां दी उमर केवल पंज साल ही थी। पढ़ाइया दे मामले च ये बड़े ही कमजोर थे। पंच पढ़ने ते बाद इन्हां स्कूले जो जांणा बन्द करी दिता। पढ़ने वास्ते उन्हां जो पिता होरां ते मार पौंदी थी। पंज पढ़ने ते बाद सन 1915 च अमृतसर दे औद्योगिक स्कूल च आर्ट–क्राफट दा सलाना कोर्स पास किता। इन्हां दी इच्छा थी कि ये अपणे पिता सांई फौजा च भर्ती होन, कन्ने देस सेवा करन। सन 1917 च इन्हां दे पिता दा देहांत होई गिया, उस वक्त इन्हां दी उमर केवल सोलह साल ही थी। माता ता पहलै ही गुजरी चुक्कियो थी। सन 1919 च फौजा च भर्ती भी होई गै। उन्हां हैड डाफटसमैंन दे रूपे च इराक दे बगदाद च कम्म किता। सन 1923 च उन्हां ये नौकरी छडी दिति। इन्हां दा ब्याह 1923 च बीवी इंदरकौर कन्ने होया। नौकरी छडणें ते बाद इन्हां अमृतसर दे फबारा चौक च सुभास सट्डियो नांये दी सथापना किती। 1926 जो ये लाहौर चली गै। जित्थू इन्हां अनारकली बाजार च इक्को स्कूल आफ आर्ट नांये दे शिल्प कला केन्द्र खोलया। ओत्थू भी उन्हां दा मन नी लग्गया। 1931 च ये दिल्ली आई गैं। जित्थू इन्हां कनाट प्लैस च इक आर्ट स्टूडियो खोली करी कम्म सुरू करी दिता। कनाट प्लेस च पोस्टर पेंटिंग्स दा अभ्यास किता। उसते बाद उन्हां भरतीय रेलवे, डाक–तार विभाग वास्ते कई पोस्टर तैयार किते। इसते बाद सह राजा–महाराजा देयां चित्रां जो बणाणा सुरू करी दिता। थोड़े दे टैमे च ही उन्हां छेल–छबीले, सुन्दर मन मोहक चित्रां जो बणाई करी ख्याती प्राप्त करी लेई। 14 जनवरी 1967 जो इन्हां दीआ लाड़िआ दा स्वर्गवास होई गिया।

सन 1945 च इन्हां सिमले च

अश्वनी कौंडल

भारतीय सेना च अटठ महिने प्रचार अधिकारी दे ओहदे च नौकरी किती। सन 1947 च ये हिमाचले दिआ कांगड़ा घाटिया च आई करी बसणा चाहन्दे थै। उन्हां ये फेसला किता कि पालमपुर सहरे ते पन्दराह किलोमिटर दूर अन्दरेटे ग्रांयें च अपणा ठिकाणा बणाणा। ओत्थू दा माहौल बड़ा ही सुन्दर कन्ने मनमोहक सोर सराबे ते दूर। हरे–भरे खेत, पेड़ कन्ने बर्फे नै ढकियां धौलाधार घाटियां। सुरू च तां सह इक कमरे दे कराये दे मकाने च रै। फिरी उन्हां दो साल बाद सन 1949 च अपणा मकान बणाई लिया। मकाने दे गेटे च लिक्खया है ग्रो मोर गुड यानि कि ज्यादा अच्छाई उपजाओ। उन्हां दिआं कलाकृतिआं दा भी ये ही संदेश है।

सरदार सोभा सिंह इक मन्नयो चित्रकार ही नी थे बल्कि इक कवि कन्ने दार्सनिक भी थे। सह कला जो इक सक्ति कन्ने बल मनदे थे। इन्हां जो दार नांये ते भी जांणया जांन्दा है। इन्हां दे पिता इन्हां जो गलांदे रहन्दे थे 'कि कला कन्ने –कन्ने कम्म भी करना चाइदा है नी ता सारी उमर तुद भूक्खे मरना है। कला कदी रोटी नी दिंदी।'

हिमाचले च रहन्देयां इन्हां लगभग इक हजार चार सौ तस्वीरां बणाई करी अपणी कला दा जौहर लौकां जो दसया। अनेक तस्वीरां च हिमाचल दी सभ्यता– संस्कृति कन्ने प्रकृति दी झलक दुसदी है। गद्दन, कांगड़ा दुल्हन, सोनी महिवाल आदि कई मसहूर चित्रां नै इस प्रदेसे, देसे च ही नी अपितु विदेसां च भी ख्याति प्राप्त कितियो है। इसते अलावा वीरां, देवी–देवतयां कन्ने कई साधु संता दिआं तस्वीरां बणाई करी कई रंग बिखेरयो हन।

सरदार जी नै अपणी चित्रकारी च नारी दा चित्रण बड़ी ही कामुकता कन्ने भावुकता नाल कितया है। संत चित्रण च उन्हां कई महान संता, गुरूआं दे चित्रां च निखार अन्दया है। सरदार सोभा सिंह जी मूर्तिकार भी थे इसा गल्ला दा बड़े ही घट लोकां जो पता था। सन 1972 च हिमाचल प्रदेस विसवविद्यालय कोर्ट दे सदस्य बणे। 1973 च सूचना कन्ने प्रसारण मंत्रालय दवारा इन्हां पर दस्तावेजी फिल्म लोकां दा कलाकार बणाई। सन 1983 जो भारत सरकार नै इन्हां जो अलंकरण पदमश्री कन्ने सम्मानित कित्तया है।

सरदार हमेसा आजाद प्रकृति दे रहे। कदी भी कुसी दी गुलामी नी किती। 8 मार्च 1985 च पजांबी यूनीवरसिटी पटियाला ने इस महान कलाकार जो डाक्टर आफ लिटरेचर दी उपाधी कन्ने सम्मानित किता। सही मायने च सरदार सोभा सिंह इक संत कलाकार थे। गलबात च सामान्यता, व्यक्तित्व सरल, सहज स्वभाव गम्भीर चिंतन ते दार्सनिक। उन्हां लोकां जो संदेस दितिया कि जिस भी बच्चे च कलाकार दे गुण होन ता उसदी सहायता करनी चाहिदी है कन्ने उस जो अग्गे बढ़ने दी प्रेरणा देणी चाहिदी है। उन्हां अपणियां जिन्दगिआ च कई उतार चढ़ाव दिक्खायो हन, पर अपणी कलात्मक, सृजनात्मकता कन्ने संवेदनशीलता जो हमेसा बणाई रक्खया है।

जिन्दगी दे आक्खरी पलां च उन्हां दी कुड़ियें गुरचरण नै उन्हां दी पूरे लग्नभाव नै सेवा किती। सेवा करने ते बाद सह सब कुछ अपणी कुड़िया जो सौंपी करी 22 अगस्त 1986 जो इस संसारे ते जुदा होई गै। अज्ज भी अंद्रेटे च उन्हां दी कुड़ी गुरचरण कन्ने उसा दा मुन्डा उन्हां दिआं यादां जो तरो ताजा रक्खया है। अंद्रेरेटा च उन्हां दे निवास स्थान कन्ने इक उन्हां दे नांये दी आर्ट गैलरी बणाईयो है, जिस बिच उन्हां दे बणाये चित्र सजाई करी क्रमबार रक्खयो हन। ओत्थू साफ लिक्खया है कि गैलरी दे अन्दर फोटो खींजंणा साफ मना है। गैलरी ब्याहगा दस बजे ते ले करी संजा पजं बजे तक ही खुली रहंदी है। उसा आर्ट गैलरिया च देसे, प्रदेसे ते अलावा विदेसां ते भी लोक आई करी गैलरिया दी सोभा बढ़ांदे हन। उन्हां दी आर्ट गैलरी कला प्रेमियां तांई इक तीर्थ स्थल बणी गिआ है।

लोक उन्हां जो इक साधु, ऋषि, मुनि दे आईने दे रूप च दिक्खदे थे। ये ही वजह थी कि उन्हां लोंका दे बीच इक संत कलाकार दी छवि उभारियो थी। उन्हां ते जांणें ते बाद भी उन्हां जो याद किता जांदा है। अज्ज भी उन्हां दी अदाकारी दे चित्र दफतरां, घरां दियां दिवारां च टंगयों मिलदे हन। उन्हां दे जन्म दिने दयाड़ी अंद्रेटे च आर्ट गैलरी च बच्च्यां वास्ते चित्रकला दा आयोजन हुन्दा है। सह अज्ज भी असां दे बिच नी हुन्दयां भी असां दे दिलां बिच हन। उन्हां दे चित्र असां जो उन्हां दे होणें दा अहसास करान्दे हन।

स्याणयां रीयां गलाऊरियां

1. तलवारा रा घाव भरी जांदा
   पर बोलूरी गल्ल नी भुलदी।
2. पैहर सबेला रे मरूरे जो कितना कर रोणा।
3. ग्वार, गलाई के मरो या खाई के मरो।
4. महाराज्यां रे खजानेयां
   झूठयां री जबानी केजी रे घाटे।
5. जबरे रा पत्थर चढ़दा कवालीया
6. जिऊंदेयां जो नी तिल
   मरूरेयां जो तलुंएं
7. बह्णा, बसूटी, बरया,
   उत्थी माह्णू कियां मरया।
8. खादा खाण–कुरवाण तिसते भुखे खरे
   हंड्या साथ–कुसाथ तिसरे कल्ले खरे।
9. ढिंगा पर ले ध्याड़े।
10. कम्मा जो बोल्या तां तापुरा
    खाणे जो बोल्या तां मुंह बाकुरा।

–एस.आर. आजाद

कबता

बड़ी सौह्णी चम्बे री घाटी

बड़ी सौह्णी चम्बे री घाटी मेरे मितरा,
ठंडे–ठंडे नाडु ते डुग्गे–डुग्गे नालु ओ।
नाल़ा–खौह्लां, फाट्टां–घाह्लां गीत मिट्ठे गूंजदे,
बांसुरी बजांदे ग्वालु ओ।

द्रम्मण–हट्टलियां शुरू चम्बा हुन्दा,
मुकदा लंगेरे रीया धारा ओ।
इक्क पास्से पीर पंजाले प कैलास,
दुआ उच्ची धारां रा नजारा ओ॥

डलहौजी अपणी चम्बे रा दिलडु,
ससारां बिच्च जेह्ड़ी मशहूर ओ।
झिकड़े मैदानां जदु आग्ग बरदी,
आंदे लोक डलहौजी जरूर ओ।

संघणी–किहारा सेबा रे बगीचे,
तीसे–छतराड़ी भरमौर ओ।
चम्बे री धरती शिवजी री धरती,
इत्थे बसे शिवजी ते गौरां ओ।

पांगिए री घाटिया चन्द्रभागा बगदी,
चम्बे रीया रावी बगदी ओ।
टेढ़ी–मेढ़ी चलदी नखरे करदी,
जियां नौईं लाड़ी लगदी ओ।

साहो–छतराड़ी–भरमौर–बैरागढ़,
जातरा रा सुन्दर नजारा ओ।
समलेऊ–भंजराडू–सुरगाणी कन्ने खिरड़ी,
लगादियां छिन्जां धारा–धारा ओ।

मिन्नी स्वीटजरलैंड चम्बे बिच्च लोको,
नां जिसदा खज्जियारा ओ।
घणे– घणे बण खज्जी नागे दा मंदर,
कन्ने छैल झीला रा नजारा ओ।

चम्बे शहरा बसदा लच्छमी नरैण,
भलेई बसै माता भद्रकाली ओ।
पांगिए री घाटिया बसै माता मिंधला,
लोकां री करै रखवाली ओ।

मैहले तां माता हिडिम्बा बसदी,
बसै भरमौर भरमाणी ओ।
कलन्दरे बणागेई, बन्नी माता बेलजा,
डैणकुंड बसै पैहलाणी ओ।

बैरा–स्यूल डैम सुरगाणी,
चौहड़े पुले डैम चमेरा ओ।
चूह्ने रे परगणे थीं डैम लोको,
करदे दूर ह्नेरा ओ।

नाहणी–धूप–कौड़–पत्तीस–नागछतरी ते चमकणू,
उगदे चम्बे रीयां धारां ओ।
ट्रकां रे ट्रक भरी– भरी जान्दे,
बिकदे पंजाबा रे बाजारा ओ।

भटिया रे हार छैल पद्धरे मैदान,
भट्टिया री शान निराली ओ।
कुंजर महादेव कन्ने बिणतरू नाग,
भट्टिया री बैट्ठे रखवाली ओ।

कुंजु चैंचलो रे गीत, सुन्नी–भुंकुए री प्रीत,
चम्बे री शान बद्धान्दे ओ।
चम्बे री संस्कृति जग च निराली,
दिक्खणी जो दूरा– दूरा आन्दे ओ।

चम्बा अचम्भा धुडुए री धरती,
बसेया रा उच्ची–उच्ची धारा ओ।
धुडुए री धरती री शान निराली ए,
दर्दे जो जानी ते प्यारा ओ।

–अशोक दर्द

सामाजिक विषयों को उजागर करने में मीडिया के प्रयास

(पृष्ठ 1 का शेष) रहा है।

श्री थानवी ने कहा कि पत्रकारों के लिए राष्ट्र व समाज हित सर्वोपरि होना चाहिए तथा मीडिया का यह कर्तव्य बनता है कि समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और शासन की खामियों को प्रमुखता से उठाएं जिसके लिए उन्हें किसी भी व्यक्ति के ओहदे की परवाह नहीं करनी चाहिए।

इससे पूर्व, वरिष्ठ पत्रकार श्री वेपा राव ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय प्रेस दिवस वास्तव में मीडिया के लोगों के लिए आत्म विवेचन करने भविष्य की रणनीति निर्धारित करने का अवसर होता है। उन्होंने कहा कि मीडिया एक सामाजिक हथियार है, जिसका प्रयोग समाज की बेहतरी के लिए किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर परिचर्चा का भी आयोजन किया गया, जिसमें पत्रकारों तथा पत्रकारिता एवं जन संचार के विद्यार्थियों ने भाग लिया और मीडिया से सम्बन्धित मामलों व चुनौतियों पर बहुमूल्य सुझाव दिए।

निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क श्री राकेश शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

ऊना

मीडिया विशेषज्ञ व एग्रो पैकेजिंग के पूर्व उपाध्यक्ष ओंकार शर्मा ने कहा है कि जनमत तैयार करने में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और चूंकि पत्रकार समाज के सचेतक और प्रहरी हैं इसलिए उनकी भूमिका और भी चुनौतीपूर्ण हो जाती है। ओंकार शर्मा गत दिनों बचत भवन में राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर आयोजित सूचना एवं जनसंपर्क विभाग व प्रेस क्लब के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित जिला स्तरीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में ओंकार शर्मा ने कहा कि आज पत्रकारिता का फलक बिल्कुल बदल गया है और मीडिया सामाजिक सरोकारों के प्रति भी सजग है। उन्होंने कहा कि आम आदमी चूंकि खबरों पर भरोसा करता है इसलिए मीडिया का दायित्व और भी बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को निष्पक्ष और मर्यादित पत्रकारिता के दायित्व का निर्वहन करते हुए एक स्वस्थ और जागरूक समाज की परिकल्पना को साकार करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि आज पत्रकारिता के क्षेत्र में गिरावट भी किया आई और पेड न्यूज की प्रवृति ने पत्रकारिता की साख को चोट पहुंचाई है।

एसपी अनुपम शर्मा ने कहा कि आज आम आदमी की दिनचर्या की शुरुआत अखबार से होती है और अधिकांश लोगों की दिनचर्या का समापन रात को विभिन्न चौनलों पर प्रसारित खबरों से होता है। उन्होंने कहा न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधानपालिका और पत्रकारिता लोकतंत्र के चार मजबूत स्तंभ हैं। इन सभी की अपनी-अपनी जिम्मेदारियां हैं।

वरिष्ठ पत्रकार राजेश शर्मा ने चर्चा की शुरुआत करते हुए कहा कि आज सूचना का युग है और हर सार्वजनिक मामले व क्षेत्र पर जनसाधारण की नजर है। ऐसे में पत्रकार को भी हर वक्त सजग और अपडेट रहना पड़ता है। पत्रकार को संवेदनशील, निर्भीक और अपने दायित्वों के प्रति सजग होना चाहिए।

डीपीआरओ गुरमीत बेदी ने कहा कि जिस तरह सागर की कोई सीमा नहीं है, उसी तरह पत्रकारिता का फलक भी काफी व्यापक है और पत्रकार चूंकि सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को जनमानस तक संप्रेषित करने का सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ समाज के प्रहरी भी हैं, इसलिए उन्हें शक्ति के साथ संयम का भी परिचय देना चाहिए।

बिलासपुर

पत्रकार समाज का आईना हैं और वे अपनी लेखनी से समाचार पत्रों के माध्यम से लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कर समाज की दशा तथा दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाते हैं। ये बात पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार ने बिलासपुर में राष्ट्रीय प्रैस दिवस के अवसर पर प्रिंट व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े पत्रकारों को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिता के लिए मीडिया सहित तमाम विभागों को ईमानदारी से अपने कर्तव्य के निर्वहन की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि मीडिया की सक्रिय भूमिका के बगैर किसी भी समाज को स्वच्छ व पारदर्शी बनाना कठिन कार्य है। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान प्रैस द्वारा निभाई गई भूमिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि स्वतंत्र भारत के वर्तमान काल में प्रैस द्वारा निभाई जा रही भूमिका का बीज महान स्वतंत्रता संग्रामियों, समाज सुधारकों द्वारा बोया गया था।

वरिष्ठ पत्रकार जय कुमार शर्मा ने कहा कि वर्तमान में सिस्टम को स्वच्छ करने के लिए मीडिया को जागरूक होने की आवश्यकता है।

जिला लोकसंपर्क अधिकारी पुरूषोत्तम लाल ने मुख्यातिथि का स्वागत किया।

नाहन

वर्तमान परिपेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण में पत्रकार की भूमिका न्यायधीश की तरह होती है जिसमें निष्पक्षता, निर्भिकता, उदारता तथा पारदर्शिता का होना अति आवश्यक है।

यह उद्गार अतिरिक्त उपायुक्त श्री मनमोहन शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि सूचना एवं जन सम्पर्क कार्यालय में आयोजित जिला स्तरीय राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर उपस्थित संवाददाताओं के साथ सांझा करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर भारतीय प्रेस परिषद द्वारा दिए गए विषय सार्वजनिक मामलों में पारदर्षिता- प्रेस की भूमिका पर सामूहिक चर्चा की गई।

श्री शर्मा ने कहा कि समाचार पत्र समाज का आईना होता है जिसमें समाज की कार्यप्रणाली की भूमिका परिलक्षित होती है। उन्होंने कहा कि सूचना का अधिकार अधिनियम के लागू होने से सरकारी कार्य में पारदर्शिता आई है तथा इस परिस्थिति में समाचार पत्रों का समाज के प्रति और भी दायित्व बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि समाचार पत्र में साकारात्मक पाठय सामग्री को प्रकाशित किया जाना चाहिए क्योंकि ऐसी पत्रकारिता से समाज में सकारात्मक परिवर्तन आता है।

इस अवसर पर सेवानिवृत पूर्व निदेशक सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग डीपी जोशी ने कहा कि वर्तमान समय में पत्रकारिता निरन्तर ताकतवर हुई है और जन समस्याओं को सुलझाने में कारगर साबित हुई है।

जिला लोक सम्पर्क अधिकारी बी. आर. चौहान ने कहा कि मीडिया लोकतंत्र का वह महत्वपूर्ण स्तम्भ है जिसकी वजह से लोकतंत्र की जड़ें निरन्तर मजबूत हुई हैं।

हमीरपुर

अरण्यपाल प्रदीप ठाकुर ने कहा कि पत्रकारिता एक मिशन ही नहीं अपितु समाजसेवा का सशक्त माध्यम भी है, इसलिए मीडिया से हमेशा ही आम जनमानस की उम्मीद रहती है कि वह निष्पक्षता, पारदर्शिता और जिम्मेदारी के साथ समाज की हू-ब-हू तस्वीर प्रस्तुत करे ताकि एक अच्छे समाज और सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण की परिकल्पना को साकार किया जा सके।

श्री ठाकुर राष्ट्रीय प्रेस दिवस के उपलक्ष्य पर स्थानीय प्रेस रूम के सभागार में आयोजित जिला स्तरीय प्रेस संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ साथ नैतिक दायित्वों का भी उल्लेख किया गया है तथा संविधान की अनुपालना से ही समाज तथा देश तरक्की की तरफ बढ़ सकता है। उन्होंने कहा कि जनहित की सेवा में मीडिया एक सशक्त भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

उन्होंने कहा कि मीडिया के कारण ही कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी पात्र लोगों तक पहुंचती है तथा मीडिया समाज निर्माण में अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

सोलन

डॉ. यशवन्त सिहं परमार वानिकी एवं बागबानी विश्वविद्यालय नौणी के जन सम्पर्क अधिकारी श्री पी.डी. भारद्वाज ने कहा कि मीडिया एक कुशल चिकित्सक की तरह कार्य करता है। उन्होंने कहा कि मीडिया समाज की कुरीतियों को उजागर कर सभी के सहयोग से उनका उन्मूलन सुनिश्चित बनाता है। भारद्वाज सोलन में आयोजित जिला स्तरीय प्रेस दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से लेकर आज तक मीडिया सजग प्रहरी की भूमिका निभाता आ रहा है। प्राचीन ग्रन्थों के माध्यम से हमें महर्षि नारद द्वारा एक पत्रकार की भूमिका निभाने की जानकारी मिलती है। आज की पत्रकारिता बहुअयामी हो गई है और समाचारपत्र, रेडियो और टी.वी. के साथ-साथ इंटरनेट प्रेस का सशक्त माध्यम बन गया है। उन्होंने कहा कि आज प्रेस विभिन्न क्षेत्रों में पारदर्शिता का सम्वाहक बन कर उभरी है।

जिला लोक सम्पर्क अधिकारी तेजस्वी गुप्ता ने सभी का स्वागत करते हुए सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिता-प्रेस की भूमिका विषय की संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिता बनाए रखने और सरकार को सही फीडबैक प्रदान करने में प्रेस की विशिष्ट भूमिका रही है। सहायक लोक सम्पर्क अधिकारी श्री हेमन्त वत्स ने धन्यवाद प्रस्तुत किया।

कुल्लू

राष्ट्रीय प्रैस दिवस के उपलक्ष्य पर रविवार को परिधि गृह कुल्लू में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की ओर से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें जिला मुख्यालय में कार्यरत प्रिंट व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े सभी पत्रकारों ने भाग लिया।

इस मौके पर सभी मीडियाकर्मियों का स्वागत करते हुए जिला लोक संपर्क अधिकारी शेर सिंह शर्मा ने कहा कि सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिता लाने में मीडिया बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसलिए मीडिया कर्मियों को इस दिशा में कार्य करना चाहिए।

प्रैस क्लब कुल्लू के अध्यक्ष धनेश गौतम ने कहा कि मीडियाकर्मियों को सच्चाई को उजागर करना चाहिए।

धर्मशाला

सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिता रखने के लिए के मीडिया कर्मियों का सराहनीय योगदान रहता है। जन सरोकार से जुड़े मुद्दों एवं स्वच्छता के प्रति आमजन को जागरूक करने की दिशा में भी मीडिया की भूमिका सराहनीय रही है। भ्रष्टाचार एवं जनसरोकार जैसे गंभीर मुद्दों को उभारने में मीडिया कर्मियों की सशक्त भूमिका रहती है। यह विचार उप निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क अजय पराशर ने गत दिनों प्रेस दिवस के अवसर पर आयोजित परिचर्चा में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि गांवों और दूर-दराज क्षेत्रों की समस्याओं को मीडिया द्वारा उजागर किया जाता है तो उन्हें प्राथमिकता के आधार पर सुलझाया भी जाता है। गवर्नेंस में मीडिया उपयोगी साधन है और इससे प्रशासन को महत्वपूर्ण फीड बैक भी मिलता है। मीडिया द्वारा ही आज जन-जन तक सूचनात्मक, शिक्षाप्रद एवं मनोरंजनात्मक संदेश पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई जाती है। जनतंत्र के सभी चार स्तंभ अपने दायित्वों का निर्वाह निष्ठा पूर्वक करें तो सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिता आ सकती है।

इस अवसर पर जिला लोक सम्पर्क अधिकारी मु. अमीन शेख चिश्ती ने विभिन्न संस्थानों से जुड़े मीडिया कर्मियों का धन्यवाद किया।

शीतकालीन सत्र...

(पृष्ठ 1 का शेष) कि धर्मशाला में होने वाले शीतकालीन सत्र में भी इस प्रणाली को अपनाया जाएगा। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि केन्द्र सरकार भी सभी विभागों की कार्य प्रणाली को कागज रहित करने का प्रयास कर रही है और इसलिए केन्द्रीय मंत्री ने उन्हें पत्र भेजकर इस विषय पर होने वाले सम्मेलन में इस मॉडल को रखने को कहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के लिए यह गौरव की बात है कि इस प्रणाली को अपनाने के लिए हिमाचल देश का नेतृत्व कर रहा है। उन्होंने कहा कि ई-गवर्नेंस व ई-विधानसभा परियोजनाओं से कागजों पर होने वाले भारी भरकम खर्च को कम करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस नई प्रणाली को अपनाने से कागजों पर होने वाले सालाना करीब 15 करोड़ रुपये की बचत होगी। साथ ही पर्यावरण को भी नुकसान नहीं पहुंचेगा और वर्ष में करीब 6 से 8 हजार हरे पेड़ों को भी कागज बनाने के लिए नहीं काटना पड़ेगा।

उन्होंने केन्द्रीय मंत्री से मांग उठाई की ई-विधान प्रणाली पर शिमला में सभी राज्यों के विधानसभा अध्यक्षों का सम्मेलन बुलाया जाए ताकि इस परियोजना की सफलता के बारे में अवगत करवाया जा सके।

पंचायत चुनाव में नोटा

(पृष्ठ 1 का शेष) कहा कि हिमाचल प्रदेश देश का पहला ऐसा राज्य है जिसमें पंचायतीराज संस्थाओं के उप चुनावों में नोटा का प्रयोग किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि दिसंबर-2015 में पंचायतीराज संस्थाओं के आम चुनावों में इसका प्रयोग किया जाएगा। प्रदेश के 12 जिलों में 175 ग्राम पंचायत सदस्यों, 34 प्रधान, 27 उप प्रधान, 13 पंचायत समिति सदस्यों तथा दो जिला परिषद सदस्यों के पदों के लिए आगामी 30 नवम्बर को मतदान हो रहे हैं। मतदान सुबह सात बजे से सांय तीन बजे तक होगा। उसके बाद मतगणना की जाएगी।

उन्होंने बताया कि पंचायतों के इन उप चुनावों में करीब 75 हजार मतदाता अपने मत का प्रयोग करेंगे। इसके लिए 19413 मतदान केन्द्र बनाए गए हैं। चुनावी ड्यूटी में एक मतदान केन्द्र पर दो पुलिस कर्मी व चार अन्य कर्मचारियों की तैनाती राज्य निर्वाचन आयोग की तरफ से की जाएगी।

इन चुनावों में कांगड़ा जिले में सर्वाधिक 48 सीटों के लिए उप चुनाव होगा। जबकि मंडी में 42, हमीरपुर में 30 चंबा में 28, ऊना में 21, शिमला में 20, किन्नौर में 16, बिलासपुर व सिरमौर में 10-10 तथा सोलन जिले में 7 पदों के लिए उप चुनाव करवाया जा रहा है। देश की आजादी के बाद अब तक हुए चुनाव में इसका प्रावधान नहीं था। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों के बाद पिछले वर्ष 2013 में पांच राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, छतीसगढ़, दिल्ली व मिजोरम में हुए विधानसभा चुनाव में भी मतदाताओं को नोटा का प्रयोग करने का अधिकार प्रदान कर दिया गया था। उसके बाद वर्ष 2014 में 16वीं लोकसभा के लिए हुए आम चुनावों में नोटा के प्रयोग का अधिकार देश भर के मतदाताओं को मिला था। लोकतांत्रिक व्यवस्था के समर्थक व समाजसेवी अन्ना हजारे व उनके समर्थकों की लंबे अर्से से यह मांग की थी कि मतदाताओं को उनके नापंसद उम्मीदवारों को खारिज करने का अधिकार दिया जाए। दुनिया के कई अन्य देशों में भी यह अधिकार मतदाताओं को प्राप्त है। प्यूपिल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टीज एवं अन्य बनाम भारत संघ मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय मतदाताओं को नकारात्मक मतदान का अधिकार प्रदान करने के पक्ष में निर्णय दिया है। सर्वोच्च न्यायालय की सार्थक पहल के बाद निर्वाचन आयोग द्वारा उठाए गए कदमों से यह आशा की किरण जागी है कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए नोटा (उपर्युक्त में से कोई नहीं) मौजूदा स्थिति में प्रभावी राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाएगा तथा इससे मतदाता स्वाभाविक रूप से सशक्त होंगे।

पंडित नेहरू...

(पृष्ठ 1 का शेष) मुख्य लक्ष्य है।

दुनिया के अनेक नेताओं के साथ-साथ भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया। हिमाचल प्रदेश के मंत्रिमण्डल के वरिष्ठ सदस्यों के अतिरिक्त विभिन्न निगमों व बोर्डो के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष भी इस सम्मेलन में शामिल हुए। श्री वीरभद्र सिंह ने आयोजकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सफल आयोजन के प्रयासों की सराहना की तथा विश्वास जताया कि पंडित नेहरू की 125वीं जयन्ती के अवसर पर वर्ष भर चलने वाले समारोह के माध्यम से उनकी विरासत को देश व विदेश के लोग सही अर्थो में बनाए रखने में सहायक होंगे।

बाल स्वास्थ्य पर व्यय...

(पृष्ठ 1 का शेष) से अधिक स्वास्थ्य संस्थान खोले गये हैं तथा 900 पैरा मेडिकल व 452 चिकित्सकों की भर्ती की गई है। उन्होंने कहा कि 112 प्रशिक्षित महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की भर्ती शीघ्र की जायेगी।

उन्होंने बताया कि 18,925 आंगनबाड़ी/ मिनी आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से बच्चों को नियमित स्वास्थ्य जांच हो रही है। बच्चों को फोलिक एसिड गोलियां व पोषाहार उपलब्ध करवाने पर इस वर्ष एकीकृत बाल विकास योजना के तहत 439 करोड़ रुपये व्यय किये जा रहे हैं। उच्च स्वास्थ्य शिक्षा का उल्लेख करते हुये श्री ठाकुर ने बताया कि चम्बा, हमीरपुर तथा सिरमौर में तीन नये मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त शिमला स्थित कैंसर अस्पताल को स्तरोन्नत व मण्डी में नया केंसर अस्पताल खोला जा रहा है।

श्री ठाकुर ने कहा कि एम्स अस्पताल खोलने के लिये जहां 1200 बीघा जमीन उपलब्ध होगी वहीं खोला जायेगा तथा इसके लिये उपायुक्तों को निर्देश दिये गये हैं।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री धनी राम शांडिल ने बताया कि सोलन जिले में समाज कल्याण योजनाओं के लिये 1.5 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

विकास का आदर्श...

(पृष्ठ 1 का शेष) मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में अपने संदेश में कहा कि श्रीमती गान्धी को हिमाचल प्रदेश के लोगों तथा यहां की समृद्ध संस्कृति के प्रति अपार स्नेह था।

उन्होंने कहा कि श्रीमती गान्धी प्रदेश के जनजातीय लोगों की परम्पराओं और रीति-रिवाजों से काफी प्रभावित थीं और कई बार प्रदेश में आईं।

श्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि श्रीमती गान्धी एक प्रतिभाशाली और दूरदर्शी सोच की नेता थीं, जिसके चलते उनके कार्यकाल में देश ने अभूतपूर्व उन्नति की।

विज्ञापनदाताओं के लिये ई-मेल पता

गिरिराज साप्ताहिक द्वारा ई-मेल पर विज्ञापनों की प्राप्ति के लिये नया ई-मेल पता tendersforgiriraj@gmail.com आरम्भ किया गया है। सभी विज्ञापनदाताओं से आग्रह है कि वे अपनी निविदायें/ विज्ञापन उपरोक्त पते पर मेल करें। इससे पूर्व नियमित मेल पता girirajhp@gmail.com पर लेखों के साथ विज्ञापन भी प्राप्त किये जा रहे थे। भविष्य में विज्ञापन tendersforgiriraj@gmail.com पर ही भेजने की कृपा करें।

-सम्पादक

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2012-14 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

मसरूर मंदिर के जीर्णोद्धार पर व्यय होंगे तीन करोड़

महामहिम दलाईलामा के प्रति आस्था के कारण धर्मशाला विश्व पर्यटन मानचित्र पर विख्यात है। कांगड़ा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि गौरवशाली समृद्ध परम्पराओं तथा दलाईलामा के प्रति असीम श्रद्धा और आस्था के कारण हर वर्ष लाखों पर्यटक व श्रद्धालु धर्मशाला का रुख करते हैं।

यह उद्गार उपाध्यक्ष, पर्यटन निगम, मेजर विजय सिंह मनकोटिया ने गत दिनों धर्मशाला पर्यटन विभाग, हिमाचल सरकार, केंद्रीय तिब्बतियन प्रशासन और भारत-तिब्बत मैत्री संघ के संयुक्त तत्वावधान से आयोजित किए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय हिमालयन फैस्टीवल की तैयारियों की बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रकट किए।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश की आर्थिकी में पर्यटन का विशेष महत्व है। पर्यटन के विकास व यहां के पर्यटन स्थलों के लिए प्रचार एवं प्रसार के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि महामहिम दलाईलामा के शांति नोबेल पुरस्कार की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर धर्मशाला के मैक्लोड़गंज स्थित टिप्पा में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिमालयन उत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि उत्तर भारत के महत्वपूर्ण पुरातन धरोहर मसरूर मंदिर को पर्यटन की दृष्टि से उभारने के लिए 3 करोड़ रुपए व्यय किए जा रहे हैं।

श्री मनकोटिया ने इस अवसर पर कहा कि मैक्लोड़गंज तथा भागसू में शौचालय सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए नए शौचालयों के निर्माण हेतु धन का प्रावधान करवाया जाएगा।

इस अवसर पर उपायुक्त, कांगड़ा सी.पॉलरासु सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह से शिमला में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा भेंट करते हुए।

दो करोड़ से बनेगी ब्योंग-टटवा उठाऊ पेय जल योजना

रेणुका निर्वाचन क्षेत्र के गांव कोरग में शीघ्र ही राज्य सहकारी बैंक का विस्तार पटल खोला जाएगा, ताकि इस क्षेत्र के लोगों को बैंक सम्बन्धी सुविधाऐ घरद्वार पर उपलब्ध हो सके।

यह जानकारी मुख्य संसदीय सचिव, लोक निर्माण, श्री विनय कुमार ने गत दिनों रेणुका निर्वाचन क्षेत्र की वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोरग में वार्षिक पुरस्कार समारोह के अवसर पर उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए दी। इससे पहले श्री विनय कुमार ने गांव ब्योंग-टटवा में दो करोड़ की लागत से निर्मित होने वाली उठाऊ पेयजल योजना की आधार शिला रखी, जिसके बनने से इस क्षेत्र के तीन गांव की 22 बस्तियों की लगभग 2500 आबादी लाभान्वित होगी।

श्री विनय कुमार ने कहा कि रतवा से गेहल तक अढाई किलोमीटर सड़क बनाने के लिए 20 लाख, बडोल-शिलान सम्पर्क सड़क के लिए 10 लाख, सम्पर्क सड़क कजवा के लिए 5 लाख और उपरली बागड़ी के लिए सड़क निर्मित करने के लिए डेढ लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। उन्होने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को इन सड़कों के निर्माण कार्यो को शीघ्र आरम्भ करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए।

स्कूल के प्रधानाचार्य रमेश शर्मा ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी।

पंचायतों को सड़कों से जोड़ने के लिए अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध करवाने का आग्रह

हिमाचल प्रदेश के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री कौल सिंह ठाकुर ने गत दिनों नई दिल्ली में केन्द्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह से मुलाकात की तथा उनसे प्रदेश में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रामीण पंचायतों को सड़कों से जोड़ने के लिए अतिरिक्त केन्द्रीय सहायता उपलब्ध करवाने का आग्रह किया। उन्होंने प्रदेश के लिए स्वीकृत मनरेगा धनराशि को भी तुरन्त जारी करने का आग्रह किया ताकि प्रदेश में विकास की गति को बनाया रखा जा सके।

श्री कौल सिंह ठाकुर ने केन्द्रीय मंत्री को अवगत करवाया कि हिमाचल सरकार ने सभी पंचायतों को समयबद्ध एवं चरणबद्ध ढंग से सड़कों से जोड़ने की महत्वाकांक्षी योजना तैयार की है जिसके लिए अतिरिक्त धनराशि की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हालांकि अधिकतर पंचायतों को सड़कों से जोड़ा जा चुका है और अब सभी गांवों को जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि फिर भी दूरस्थ क्षेत्रों में विशेषकर कुल्लू व मण्डी जिलों में पर्यटन एवं धार्मिक दृष्टि से ऐसे मन्दिर हैं, जिन्हें सड़कों से जोड़े जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण सड़क सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए पर्याप्त धनराशि की आवश्यकता होती है, जिसमें केन्द्र सरकार का सहयोग अनिवार्य है।

श्री कौल सिंह ठाकुर ने प्रदेश के लिए मनरेगा की स्वीकृत राशि को शीघ्र जारी करने का मामला भी उठाया तथा केन्द्रीय मंत्री को अवगत करवाया कि प्रदेश के लिए मनरेगा की राशि में भी कटौती की गई है, जिसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में मनरेगा कार्यक्रम को सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है और इससे ग्रामीण लोगों को लाभ भी पंहुचा है।

श्री कौल सिंह ठाकुर ने पंचायत घरों को स्वच्छ बनाने व इनमें शौचालयों के निर्माण का प्रावधान करने के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध करवाने का भी अनुरोध किया। प्रदेश में पंचायतों में स्वच्छता अभियान की पहले ही राष्ट्रीय स्तर पर सराहना हो चुकी है और इस अभियान को जारी रखने के लिए केन्द्रीय सहायता समय पर उपलब्ध होना आवश्यक है।

केन्द्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री ने गंभीरतापूर्ण हिमाचल प्रदेश के इन मामलों को सुना तथा आश्वासन दिया कि मंत्रालय की ओर से हिमाचल प्रदेश के हितों की पूरी रक्षा की जाएगी तथा किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा।

खण्ड स्तर पर खेल गतिविधियों के लिए 1.60 करोड़

वन मन्त्री ठाकुर सिंह भरमौरी ने कहा कि ग्रामणी क्षेत्रों में छुपी खेल प्रतिभाओं को उभारने के लिए ब्लाक स्तर पर 1.60 करोड़ रुपये व्यय करके इण्डोर व आउट डोर खेल परिसर विकसित किये जायेंगे। वे गत दिनों राजीव गान्धी खेल अभियान के अन्तर्गत आयोजित तीन दिवसीय राज्य स्तरीय ग्रामीण खेल कूद प्रतियोगिता के समापन पर मुख्य अतिथि के रूप में शिकरत कर रहे थे।

वन मन्त्री ने कहा कि प्रदेश के उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सरकारी सेवा में तीन प्रतिशत आरक्षण तथा आर्कषक नगद पुरस्कारों का प्रावधान किया है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 24 करोड़ रुपये खर्च करके 45 खेल स्टेडियमों का निर्माण किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि मुख्यमन्त्री के प्रयासों से भाखड़ा विस्थापितों को 362 प्लाट आबांटित करने की प्रक्रिया जारी है तथा 118 विस्थापितों को प्लाट आबांटित किये जा चुके हैं तथा शेष को शीघ्र प्लाट आबांटित किये जायेंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सदर विधायक बंबर ठाकुर ने कहा कि सरकार के प्रयासों से बिलासपुर खेलों का हब बनने जा रहा है तथा यहां कहलूर परिसर में वर्ष भर विभिन्न प्रकार की खेलों जिसमें जल कीड़ा एवं साहसिक खेलें शामिल हैं, का आयोजन समय समय पर होता रहता है।

निदेशक युवा सेवाएं एवं खेल विभाग कमल शर्मा ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए खेल गतिविधियों की जानकारी दी। इस तीन दिवसीय प्रतियोगिता में प्रदेश के 12 जिलों के 1100 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

65 हजार श्रमिकों का हुआ पंजीकरण

योजना आयोग एवं बीस सूत्रीय कार्यक्रम अध्यक्ष राम लाल ठाकुर ने कहा कि प्रदेश सरकार समस्त कामगारों व उनके परिजनों को श्रम कल्याण बोर्ड के माध्यम से विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं प्रदान करने के लिए वचनवद्ध है। वे श्री नयनादेवी जी चुनाव क्षेत्र के तहत स्वारघाट में श्रम विभाग तथा हिमाचल प्रदेश भवन एवं अन्य स्वः निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कामगारों के लिए चैक वितरण समारोह में बतौर मुख्यातिथि के रूप में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने गरीब से गरीब व्यक्ति के उत्थान के लिए विभिन्न श्रम कल्याण बोर्ड की स्थापना की है। उन्होंने कहा कि श्रम कल्याण बोर्ड के माध्यम से अब तक 65000 श्रमिकों का पंजीकरण किया गया है और सभी कामगारों को श्रम कल्याण बोर्ड के माध्यम से कुछ न कुछ राहत प्रदान की गई है। श्री ठाकुर ने हिमाचल विल्डिंग कन्सट्रक्शन मजदूर युनियन बिलासपुर द्वारा दिये गये मांग पत्र पर संजीदगी से विचार करने का आश्वासन भी दिया।

188 श्रमिकों को 2.82 लाख प्रदान

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हिमाचल श्रम एवं अन्य स्व निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष बाबा हरदीप सिंह ने कहा कि जिला बिलासपुर में श्रम कल्याण बोर्ड के माध्यम से 5200 कामगारों का पंजीकरण करवाया गया है जिसमें से दो हजार के लगभग कामगारों को 85 लाख रुपये के वित्तीय लाभ दिये जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि स्वारघाट में 188 कामगारों को 2.82 लाख रुपये के चैक वितरित किये गये तथा 58 कामगारों का पंजीकरण किया गया है।

इस अवसर पर मुख्यातिथि द्वारा 188 श्रमिकों को 2.82 लाख रुपये के चैक भी वितरित किये गये।

लैंटाना से बनेगा फर्नीचर

प्रदेश सरकार ने लैंटाना के उन्मूलन के लिए प्रभावी कदम उठाये हैं। लैंटाना से फर्नीचर बनाने के लिए प्रयास किये जाएंगे। इससे उपजाऊ भूमि को हम खरपतवार झाड़ी से मुक्त करवाने में भी सहायता मिलेगी।

यह जानकारी वन मंत्री श्री ठाकुर सिंह भरमौरी ने गत दिनों सोलन जिले की ग्राम पंचायत पनेश में आयोजित मेले की अध्यक्षता करते हुए दी।

उन्होंने कहा कि जंगली जानवरों द्वारा खेती को हो रहे नुकसान को रोकने के लिए भी सरकार कृतसंकल्प है। जंगलों में फलदार पौधे व औषधीय वृक्ष लगाये जा रहे हैं। बंदरों की संख्या को रोकने के लिए 7 नसबन्दी केन्द्र खोले गये हैं। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री सोहनलाल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दो वर्ष में निर्मित होगी ऊना जिले की सबसे बड़ी लघु सिंचाई योजना

ऊना जिले में 41 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाली जिले की सबसे बड़ी लघु सिंचाई योजना का निर्माण कार्य दो वर्ष की अवधि में पूर्ण कर लिया जाएगा। इस योजना के लिए भूमि हस्तांतरण तथा निविदा प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। यह जानकारी उद्योग मंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री ने गत दिनों ऊना में हरोली विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों का निरीक्षण करने के उपरान्त दी।

उन्होंने कहा कि योजना के तहत 13.50 लाख रुपये जल भण्डारण टैंक व 28 करोड़ रुपये की राशि उठाऊ योजना निर्माण पर व्यय होंगी। योजना के तहत 18 बड़े नलकूप व सिंधा व अमराली में दो वृहद भण्डारण टैंकों का निर्माण होगा।

श्री अग्निहोत्री ने कहा कि पालकवाह को पर्यटन की दृष्टि से निर्मित किया जा रहा है। अजौली- लालूवाल सड़क को पक्का करने पर 15.15 करोड़ रुपये व्यय किये जा रहे हैं।

सरकार बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिये प्रतिबद्ध

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. कर्नल धनीराम शांडिल ने कहा कि प्रदेश सरकार दुर्गम क्षेत्रों सहित सभी इलाकों में छात्रों को उनके घर-द्वार पर गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। डॉ. शांडिल अर्की विधानसभा क्षेत्र की मान पंचायत के बवासी गांव में राजकीय उच्च पाठशाला में 6.30 लाख की लागत से नवनिर्मित दो कमरों के लोकार्पण के उपरान्त उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर रहे थे।

डॉ. शांडिल ने कहा कि सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्य को हासिल करने के लिए यह सुनिश्चित बनाया जा रहा है कि प्रत्येक तीन किलोमीटर के दायरे में बच्चों को स्कूल उपलब्ध हो। चरणबद्ध तरीके से प्रदेश के सभी स्कूलों में अध्यापकों के खाली पद भरे जा रहे हैं। राज्य सरकार यह प्रयास भी कर रही है कि स्कूलों की विज्ञान प्रयोगशालाओं को स्तरोन्नत किया जाए और पुस्तकालयों में विषयवार एवं प्रतियोगिताओं के अनुरूप आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध हों।

डॉ. शांडिल ने इस अवसर राजकीय उच्च पाठशाला बवासी में अतिरिक्त हॉल के निर्माण के लिए 6 लाख रुपये प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों को अपनी ऐच्छिक निधि से 2100 रुपये प्रदान करने की घोषणा भी की।

प्रकाशकः राकेश शर्मा, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः सन्दीप नेगी, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381-PBX.-29, प्रधान सम्पादकः राकेश शर्मा, वरिष्ठ सम्पादकः यादविन्दर सिंह चौहान, सम्पादकः विनोद भारद्वाज कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. OR girirajweekly 1978 @yahoo.co. in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य